ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत शिवलिंग

डी.वी.डी. नं. 384, वी.सी.डी. नं. 2324, ऑडियो नं. 2810, मु.ता.5.11.66

रात्रि क्लास चल रहा था- 05.11.1966। दूसरे पेज के मध्यादि में बात चल रही थी- जो खुद ही पूज्य थे, वो द्वापर में कैसे पुजारी बन गए? लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, उसमें फिर वो ही राजा-रानी बिगर लाइट के ताज के मत्था टेकते हैं। कौन-से नारायण की बात है? क्योंकि सतयुग में जो भी आठ गद्दियाँ होती हैं, वो सब उतरती कला वाली हैं और उन उतरती कला वाली आठों गद्दियों के जो मालिक होते हैं, उनका रचयिता संगमयुग में है, जिसकी पीढ़ी दर पीढ़ी सतयुग में चलती है। संगम में वो ही नर से नारायण बनते हैं। वो किसकी पूजा करते होंगे? उनसे ऊँचा तो कोई नारायण है ही नहीं। तो सतयुग में उनकी जो पीढ़ियाँ चलती हैं, उन पीढ़ियों में काबिज़ होने वाले नारायण द्वापर में आ करके पूजा करते हैं। सतयुग का फर्स्ट नारायण पहले-2 पूजा करते हैं। तो सोचना चाहिए कि नई दुनियाँ की स्थापना करने की ज़िम्मेवारी पहले-2 किसने उठाई। ज़िम्मेवारी का ताज कहा जाता है। जो संगमयुग में जितनी ही ज़िम्मेवारी उठाते हैं, उतना ही उनको ज़िम्मेवारी का ताज अर्थात् स्थूल ताज भी मिलता है और लाइट का ताज भी मिलता है। लाइट अर्थात् ज्ञान की लाइट ज़रूर संगमयुग में धारण की है। ये बड़े-ते-बड़ी समझानी है कि कौन राजाएँ द्वापर में माथा टेक होते हैं, जिनको लाइट का ताज नहीं होता है। ज्ञान की लाइट कहो, पवित्रता की लाइट कहो; क्योंकि ये ज्ञान की लाइट परमपवित्र/एवरप्योर सुप्रीम सोल बाप से मिलती है, जो सदाकाल के लिए पवित्र है। पतित दुनियाँ में आता है, पतित तन में आता है, तो भी परम पवित्र है; अपवित्रता का संकल्प मात्र भी नहीं आता। वो आत्माओं का बाप है, जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है; इसलिए त्रिकालदर्शी है, तीनों काल के सत्य को जानने वाला है। ज्ञान माना ही सच्चाई, सच्चाई की जानकारी। वो जानकारी सदाकाल के लिए एक परमपवित्र परमपिता, जिसका कोई पिता नहीं है, उसी के पास है; इसलिए त्रिकालदर्शी है; परंतु वो ब्रह्मा के तन से कहता है कि मैं त्रिकालदर्शी तो हूँ; परंतु मास्टर त्रिकालदर्शी नहीं। मास्टर त्रिकालदर्शी तुम बच्चे बनते हो। ''रचयिता बाप ही रचना के आदि-मध्य-अंत की नॉलेज आकर देते हैं। तुम भी मास्टर त्रिकालदर्शी बनते हो।'' (मु.ता.6.12.71 पृ.2 अंत) मास्टर उन्हें कहा जाता है, जो प्रैक्टिकल करके दिखावे।

जो ऊँचे-ते-ऊँचा बाप है, जिसके पास ज्ञान का अखूट भण्डार है, ऐसा अखूट भण्डार, जिसमें से सारा ही भण्डार निकाल लिया जाए, तो भी खुटने वाला नहीं; सम्पूर्ण-का-सम्पूर्ण बचता है। जो भी आत्माएँ हैं, उन आत्मा रूपी पात्रधारियों में, रंगमंच पर पार्ट बजाने वालों में जो पार्टधारी बड़े-ते-बड़ा पार्ट बजाता है, मुख्य एक्टर है, जिसे हीरो कहा जाता है, वो मनुष्य-सृष्टि का हीरो, मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ का बीज है। उस मनुष्य-सृष्टि के झाड़ के बीज में परमपिता परमात्मा शिव पहले-2 प्रवेश करते हैं। जो कहते हैं कि मैं जिस तन में भी आता हूँ, उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ। ''अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम 'ब्रह्मा' रखना पड़े।'' (मु.ता.17.3.73 पृ.2 अंत) तो वो हुआ परम्ब्रह्म; क्योंकि ब्रह्मा नामधारी तो बहुत हैं। चतुर्मुखी ब्रह्मा, पंचमुखी ब्रह्मा गाया हुआ है। गाते भी हैं- गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।। अर्थात् सभी ब्रह्मा नामधारियों को नमन नहीं करता हूँ। मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। बाबा कहा ही तब जाता है, जब वो निराकार सुप्रीम सोल शिव बाप साकार शरीर में प्रवेश करता है। साकार और निराकार के मेल को 'बाबा' कहा जाता है। ''अशरीरी और शरीरधारी का

मिलन है। उनको तुम कहते हो 'बाबा'।'' (मु.ता.9.3.89 पृ.1 मध्य) ग्राण्ड फादर को भी 'बाबा' कहा जाता है। तो उस एक को, जो डायरैक्ट नर से नारायण बनता है, विश्व का मालिक बनता है, प्रैक्टिकल में बनता है, इस सृष्टि में वो हीरो पार्टधारी ही विश्व की ज़िम्मेवारी का ताजधारी है। बाप का जो बड़ा बच्चा होता है, उसी के सर पर सारे विश्व की ज़िम्मेवारी का ताज रखा जाता है।

आत्माओं का बाप शिव; और शिव का आत्माओं रूपी बच्चों के बीच बड़ा बच्चा कौन? जो बड़ा बच्चा है, उसी के लिए गायन है 'त्रिमूर्ति शिव' अर्थात् ब्रह्मा देवता, विष्णु देवता और शंकर देवता। तीन ऊँचे-ते-ऊँचे देवताओं की तीन मूर्तियाँ; परंतु वो तीनों मूर्तियाँ किसकी? शिव की तीन मूर्तियाँ, जो सूक्ष्मवतन में नंबरवार दिखाई जाती हैं। ब्रह्मा की मूर्ति साकार वतन के नज़दीक दिखाई जाती है, विष्णु की मूर्ति उससे ऊँची स्टेज में दिखाते हैं और शंकर की मूर्ति, आत्माओं का जो धाम है, जो आत्माओं के बाप का घर है, आत्माओं का भी घर है, उस परमधाम के बिल्कुल नज़दीक है। इसलिए कहा जाता है 'देव-2 महादेव', ब्रह्मादेव, विष्णुदेव और उनसे भी ऊपर महादेव। तो बताओ, शिव सुप्रीम सोल बाप का बड़ा बच्चा कौन? क्योंकि बाप आते ही हैं मनुष्य को देवता बनाने। तो देवता बनने वालों में कोई तो अव्वल नंबर देवता होगा ना! जो अव्वल नंबर देवता बनता है, उसी के लिए मुसलमानों में भी आज तक गायन है- ''अल्लाह अव्वलदीन।'' अल्लाह ने आ करके अव्वल नंबर दीन अर्थात् धर्म की स्थापना की। तो वो ऊँचे-ते-ऊँचा मनुष्य-सृष्टि का बाप, ऊँच-ते-ऊँच पार्टधारी है और ऊँच-ते-ऊँच पद पाने वाला है। बाक़ी जो सतयुग में नारायण बनते हैं, वो सब उतरती कला के बनते हैं। पहली गद्दी से ही दृष्टि का सुख भोगते-2 शक्ति क्षीण होती रहती है और कलाएँ नीचे गिरती रहती हैं; परंतु संगमयुग में जो नर से डायरैक्ट नारायण बनता है, सारे विश्व का मालिक बनता है, वो चढ़ती कला का है, उतरती कला का नहीं; क्योंकि अतीन्द्रिय सुख भोगने वाला है, अतीन्द्रिय सुख भोगने वालों में सबसे ऊँची स्टेज वाला है। अतीन्द्रिय सुख का मतलब ही है- इन्द्रियों से अतीत। उसकी यादगार मंदिरों में दिखाई जाती है 'शिवलिंग'। जो लिंग है, मूर्ति तो है, साकार तो है; परंतु उसको इन्द्रियाँ नहीं दिखाई जातीं; क्योंकि इन्द्रियातीत है और वो अकेला नहीं है, ज्ञान-सूर्य शिव, उनके बच्चों का पूरा सूर्यवंशी परिवार है, जो अतीन्द्रिय सुख भोगने वाला है; इसलिए गायन है-अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। नाम 'गोप-गोपियाँ' क्यों दिया? जैसा काम वैसा नाम। गोप माना ही गुप्त। ज़रूर भगवान बाप के साथ गुप्त संबंध जोड़ा है। संबंध इन्द्रियों के द्वारा ही जोड़े जाते हैं; परंतु जिसके साथ इन्द्रियों के संबंध जोड़े हैं, वो निराकार की बात नहीं है। निराकार को इन्द्रियाँ होती हैं क्या? (किसी ने कहा- नहीं) किसकी बात है? (किसी ने कहा- साकार बाप की) जिस साकार में वो निराकार शिव प्रवेश करता है, वो साकार अपने एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी 84वें अन्तिम जन्म में पहले तो पतिततम कामी-काँटा होता है; इन्द्रियों से अतीत नहीं कहा जा सकता; क्योंकि पुरुषार्थी जीवन है। पुरुषार्थी का अर्थ ही है- 'पुरु' माने शरीर रूपी पुरी, 'श' माने शयन करने वाला; शरीर रूपी पुरी में शयन करने वाली आत्मा, आनंद करने वाली आत्मा, शांति का अनुभव करने वाली आत्मा; परंतु वो तो सम्पूर्ण आत्मा की बात है। जो अपूर्ण आत्मा देह के अटैचमेण्ट में होती है, उसको सम्पूर्ण थोड़े ही कहेंगे। तो जिस पतिततम कामी-काँटे में सुप्रीम सोल प्रवेश करते हैं, वो पहले-2 सम्पूर्ण है या अपूर्ण है? अपूर्ण है; परंतु शिव सुप्रीम सोल जो चैतन्य ज्ञान-सूर्य है, वो उसमें प्रवेश करता है। जो पतिततम कामी-काँटे वाली आत्मा है, वो भी ज्ञान-सूर्य की लाइट के संसर्ग-सम्पर्क-संबंध में आती है। लाइट कोई स्थूल लाइट नहीं है; त्रिकालदर्शी के सच्चे ज्ञान की लाइट है। तीनों कालों में सृष्टि की सत्यता क्या है, उस सच्चाई का ज्ञान है। वो सच्चाई ही गॉड इज़ ट्रुथ कही जाती है और ट्रुथ इज़ गॉड कहा जाता है। नहीं तो वो क्या है? वो अखूट ज्ञान का भण्डार ही है। वो अखूट ज्ञान का भण्डार इस सृष्टि पर जब आता है, तो आत्मा रूपी बच्चों के बीच

जो बड़े-ते-बड़ा बच्चा है, लम्बे-से-लम्बी आयु वाला है; बड़ा बच्चा लम्बी आयु वाला होता है ना! तो उस बड़े बच्चे को पहले-2 वर्सा देता है। यही परम्परा खास करके भारत के राजाओं में और दुनियाँ में भी चली आ रही है। हिस्ट्री में जो भी राजाएँ हुए हैं, उन्होंने अपने बड़े बच्चे को राजाई दी; इसलिए गीता में भी लिखा हुआ है- ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।'' (गीता 3/23)- दुनियाँ में जो भी मनुष्यमात्र हैं, वो मेरे रास्ते का ही अनुगमन करते हैं। उस सुप्रीम सोल बाप ने जो परम्परा चलाई, उसी परम्परा पर चलते आ रहे हैं। ये तो रही आत्माओं और आत्माओं के बाप की बात और आत्मा रूपी बच्चों में जो बड़ा बच्चा है, उस बच्चे की बात।

अब साकार मनुष्य-सृष्टि में आ जाओ। साकार मनुष्य-सृष्टि रूपी जो वृक्ष है, उसका बीज कौन है? अरे! कोई बीज है या नहीं? (किसी ने कहा- है) कौन है? वही, जो अवश्य ही सभी धर्मों में थोड़ी-बहुत मान्यता प्राप्त है। सनातन धर्म वाले, जो द्वापरयुग से अपन को 'हिन्दू' कहने लग पड़े, वो भी उसे आदिदेव के रूप में मानते हैं- ''त्वम् आदिदेवः पुरुषः पुराणः''। (गीता 11/38) ''जगतं पितरं वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ।'' सृष्टि के आदिपुरुष को आदम के रूप में मुसलमान लोग भी मानते हैं, क्रिश्चियन लोग भी ऐडम के रूप में मानते हैं, जैनी लोग भी आदिनाथ के रूप में मानते हैं। तो वो सृष्टि का आदिपुरुष, वो ही मनुष्य-सृष्टि का बीज है। सृष्टि रूपी झाड़ में जड़ें भी नष्ट हो जाती हैं, तना भी नष्ट हो जाता है, टहनियाँ भी नष्ट हो जाती हैं, फल-फूल भी नष्ट हो जाते हैं, पत्ते भी नष्ट हो जाते हैं; क्या बचता है? बीज बचता है। बीज अविनाशी है। जैसे ये हमारा शरीर रूपी झाड़ है। ये शरीर रूपी झाड़ विनाशी है। इसके सारे अंग- हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान, सब विनाशी हैं; परंतु इस शरीर का बीज कौन है? (किसी ने कहा- आत्मा) आत्मा अविनाशी है। ऐसे ही मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ में जो सारी मनुष्य-सृष्टि का बीज है, जिसे भारतीय परम्परा में, शास्त्रों में बताया गया है कि उसका कोई साकार बाप नहीं, कोई साकार माता नहीं। वो स्वयंभू है; स्वयं ही उत्पन्न होता है। उसको कोई साकारी माँ-बाप जन्म नहीं देते। कैसे जन्म लेता है? सुप्रीम सोल बाप जब आते हैं, दादा लेखराज ब्रह्मा के मुख से जो वेदवाणी चलाते हैं, उस वेदवाणी का मनन-चिंतन-मंथन करता है। जिसके लिए रामायण में भी गायन है- ''तुलसीदास चंदन घिसै, तिलक देत रघुवीर।'' भगवान बाप का कहना है, ब्रह्मा मुख से ही बोला है- अपने-2 शास्त्रों में अपनी-2 कथा-कहानियाँ लिख दी हैं। तो बताओ, रामायण शास्त्र किसने लिखा? कहते हैं- तुलसीदास ने लिखा; लेकिन तुलसीदास वाली आत्मा कौन-सी आत्मा है? तुलसीदास तो कलियुग में हुए और 'रामायण', जो राम-कथा दर्शाती है, वो राम तो पहले हो चुके हैं। तो तुलसीदास की आत्मा कौन-सी आत्मा हुई? राम की आत्मा हुई। ऐसे ही 'वाल्मीकि रामायण' है, जो द्वापर में लिखी गई। वहाँ भी राम की कथा है। तो 'वाल्मीकि रामायण' लिखने वाली आत्मा कौन हुई? वही राम वाली आत्मा हुई। चाहे द्वापरयुग हो, चाहे कलियुग हो, ज्ञान की लाइट लगी हुई है। ''न हि ज्ञान सदृशं पवित्रं इह विद्यते।'' (गीता 4/38) गीता में लिखा हुआ है- इस दुनियाँ में ईश्वर का जो सत्य ज्ञान है, जो गीता-ज्ञान-अमृत कहा जाता है, उससे जास्ती पवित्र और कुछ भी नहीं है; क्योंकि ज्ञान माने जानकारी। आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, परमपिता क्या है, सृष्टि क्या है, 84 का चक्र क्या है, कैसे फिरता है- इन ढेर-की-ढेर बातों की सत्य जानकारी, वही ज्ञान है। तो इस ज्ञान को जानने वाला गॉड इज़ ट्रुथ सुप्रीम फादर शिव का वो डायरैक्ट बच्चा है।

अंग्रेज़ लोग कहते हैं कि क्राइस्ट गॉड का बच्चा है। अब बताओ, क्राइस्ट ने जो बाइबिल बोली, जो बाद में बाइबिल के रूप में छपाई गई, उस बाइबिल में ज़्यादा ज्ञान की गहराइयाँ हैं या भगवद्गीता में ज़्यादा ज्ञान की गहराइयाँ हैं? (किसी ने कहा- भगवद्गीता में) सारी दुनियाँ, सारे धर्म के लोग मानते हैं कि गीता में जितना गहरा ज्ञान है, उतना गहरा ज्ञान दुनियाँ के और किसी शास्त्र में नहीं। वो एक ही शास्त्र है, जिसमें लिखा हुआ है

'श्रीमद्भगवद्गीता'। किसकी गीता? भगवद्, भगवान की गीता, भगवान का गाया हुआ गीत, जिसमें सारी सच्चाई भरी हुई है; परंतु वो संस्कृत की गीता नहीं। वो तो मनुष्यों ने लिखी है और इस सृष्टि के मनुष्यों में भी कोई ज्ञान की लाइट को धारण करने वाला मनुष्य है, पहले-2 ज्ञान की लाइट को धारण करता है, जिसका नाम गीता में आया हुआ है- 'व्यासप्रसादात्'। (गीता 18/75)- गीता-ज्ञान किसके प्रसाद से मिला? (किसी ने कहा- व्यास) व्यास का अर्थ क्या है? 'वि' माना विशेष, 'आस' माने बैठ गया- विशेष रूप में बैठ गया। किसलिए बैठ गया? जो सुप्रीम सोल बाप है, सुप्रीम गॉडफादर है, उसका वर्सा पाने के लिए खास बैठ गया। दुनियाँदारी के सारे धंधे छोड़-छाड़ करके, देह और देह की परवरिश के सारे लौकिक धंधे छोड़ करके किसके लिए बैठ गया? सुप्रीम सोल बाप का जो वर्सा है, वो पाने के लिए। सुप्रीम सोल बाप का क्या वर्सा है? (किसी ने कहा- मुक्ति और जीवनमुक्ति) सुप्रीम सोल बाप क्या है? अरे! बाप धनवान है तो धन का वर्सा देगा, मल्टीमिलियनायर है तो मल्टीमिलियन का वर्सा देगा, राजा है तो राजाई का वर्सा देगा।

अरे! ये सुप्रीम सोल बाप क्या है? ज्ञान का अखूट भण्डार है। जो ब्रह्मा के मुख से वाणी चली, जिसे 'मुरली' कहा जाता है, उसमें बताया भी है- मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार। ''मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार।'' (अ.वा.18.1.07 पृ.5 मध्य) उस ज्ञान की मुरली से प्यार नहीं तो मुरलीधर से प्यार नहीं। वो तो मुरलीधर की बात हुई। 'मुरली' (शब्द) अंग्रेज़ी में लिखेंगे तो मुडली भी आता है अर्थात् जब चाहे, जैसे चाहे, मोड़ ली; उसका नाम हुआ- मुडली। हिन्दी में कहेंगे- मुरली। वो ज्ञान की मुरलिया, भक्तिमार्ग में काठ की मुरलिया दिखाई जाती है। क्यों काठ की मुरलिया बताते हैं? क्योंकि जिसके मुख से बोली गई है; कोई आत्मा के मुख से तो बोली गई होगी ना! कौन-सी आत्मा के मुख से बोली गई? (किसी ने कहा- दादा लेखराज ब्रह्मा) वो लेखराज वाली आत्मा कठबुद्धि थी। कोई ब्रह्माकुमार-कुमारियों को गुस्सा आ जाएगा; प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ तो बहुत खुश होंगे। क्यों? बात सच्ची है या झूठी है? (किसी ने कहा- सच्ची) सच्ची कैसे है? कि दादा लेखराज ब्रह्मा के मुख से जो मुरली बोली गई, उस आत्मा ने उस मुरली का मनन-चिंतन-मंथन नहीं किया। कोई धनवान बाप का बच्चा हो, धन का सही उपयोग करे ही नहीं, तो वर्सा बेकार गया ना! कि कारगर हुआ? बेकार गया। ऐसे ही भगवान बाप सुप्रीम सोल का जो वर्सा है- ज्ञान की लाइट, उस ज्ञान की लाइट का ब्रह्मा, दादा लेखराज वाली आत्मा ने उपयोग नहीं किया। क्यों? क्योंकि सृष्टि रूपी रंगमंच पर शास्त्रों में भी उसका नाम 'हिमालयराज' है। क्या नाम दिया? हिम+आलय। 'हिम' माने बर्फ, आलय माने घर। काहे का घर? (किसी ने कहा- बर्फ का घर) बहते हुए ज्ञान-जल का घर या पत्थर की तरह जाम? (किसी ने कहा- पत्थर की तरह जाम) तो पत्थर-बुद्धि का ज्ञान हो गया; ज्ञान-मानसरोवर का ज्ञान नहीं कहेंगे। वो ज्ञान-मानसरोवर भी हिमालय पर्वत पर है, ऊँची स्टेज में है; परंतु वो ज्ञान-जल जाम है या लिक्विड है? (किसी ने कहा- जाम है) जाम है? जाम माने जमा हुआ; जैसे- बर्फ, पत्थर की तरह जम जाती है। तो देखो, ये बुद्धि की बात है। बुद्धि हज़ार नियामत है। हर आत्मा को अपने-2 पूर्वजन्मों के हिसाब से बुद्धि मिलती है। जिन्होंने बुद्धि का सदुपयोग किया, उनको अच्छी बुद्धि मिलती है; जिन्होंने दुरुपयोग किया, उनको उतनी अच्छी बुद्धि नहीं मिलती है। सिर्फ़ बुद्धि की ही बात नहीं, कोई भी अंग की बात है। कोई जन्म से ही लूले-लँगड़े पैदा होते हैं, अंधे पैदा होते हैं। क्यों? कहाँ से ये अंधापन, लूलापन, लँगड़ापन आया? पूर्वजन्मों के कर्मों के आधार पर आया।

तो बताया, इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर एक ही हीरो पार्टधारी आत्मा है, जो ज्ञान की रोशनी में सदा रत रहती है; इसलिए नाम क्या पड़ता है? (किसी ने कहा- भारत) 'भा' माने ज्ञान की रोशनी, 'रत' माने लगा रहने वाला। सतयुग-त्रेता में तो सभी देवताएँ आत्मिक स्थिति में रहते हैं, वहाँ की तो बात छोड़ दो; लेकिन जो द्वैतवादी युग है-

द्वापरयुग, जहाँ द्वैत फैलाने वाले दो-2 धर्म, दो-2 राज्य, दो-2 भाषाएँ, दो-2 कुल, दो-2 मतें फैलाने वाले देहधारी धर्मपिताएँ आते हैं, उस द्वैतवादी द्वापरयुग की दुनियाँ में भी वो भारत, जो ज्ञान की रोशनी में ही रत रहने वाला है, वो व्यास के रूप में गीता का सार तैयार करता है; इसीलिए ब्रह्माकुमार-कुमारियों के ज्ञान-यज्ञ के आदि में वो गीता के ही श्लोकों का सार सुनाया जाता था। आदि में भी गीता थी और जो आदि में सो (सभी ने कहा- अंत में), अंत में भी गीता के क्लैरिफिकेशन लोगों की बुद्धि में आवेंगे, जबान पर चलेंगे। जो विद्वान-पंडित-आचार्यों में आज भी मान्यता है- चाहे ब्रह्मा भी उतर आवे, साक्षात् भगवान भी उतर आवे, तो भी हम शास्त्रों को नहीं छोड़ेंगे। अकाट्य सत्य है। सत्य कभी नष्ट नहीं होता, जो गीता में भी लिखा है- ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।'' (गीता 2/16)- सत्य का इस दुनियाँ में कभी अभाव नहीं होता और सत्य एक ही हो सकता है; सत्य अनेक नहीं हो सकते। इसीलिए बाबा ने बोला- इस सृष्टि पर सदाकाल कायम कोई चीज़ है ही नहीं; सदाकाल कायम एक ही शिवबाबा है। ''इस सृष्टि में हट्टी (सदा) कायम कोई चीज़ है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी तो सबको नीचे आना ही है।'' (मु॰2.1.75 पृ॰3 अंत) 'शिवबाबा' साकार और निराकार का मेल एक ही है, वो इस सृष्टि पर सदा कायम है। उसी के लिए गायन है-''कालों का काल, महाकाल'', जिसको कोई काल खा ही नहीं सकता। मानवीय सृष्टि में महामृत्यु का काल; क्योंकि सामान्य मौत तो 84 जन्मों में आती ही रहती है; लेकिन जब चतुर्युगी का अंत होता है, कल्प का अंत होता है, तो सारी मानवीय सृष्टि काल के गाल में समा जाती है; परंतु वो महाकाल, काल के गाल में नहीं जा सकता, वो स्थिर रहता है; इसीलिए ईश्वरीय साक्षात्कार से बने झाड़ के चित्र के ऊपर ध्यान से देखो- कौन बैठा है? (किसी ने कहा- शंकर) नग्न मूर्ति बैठी हुई है। अर्थ है- निराकारी, देह रूपी वस्त्र नहीं है। देह रूपी वस्त्र को और उस देह की इन्द्रियों को भूला हुआ है, जिसकी शिवलिंग बनाकर भारतवर्ष में आज भी खास पूजा होती है। सारी दुनियाँ में वो लिंग-मूर्तियाँ खुदाइयों में प्राप्त हुई हैं। वो सार्वभौम मान्यता प्राप्त है।

तो वो सोमनाथ का मंदिर वाला शिवलिंग, जिसका सात्विक रूप द्वापर के आदि में मूर्ति के रूप में दिखाया गया, जिसमें लाल पत्थर का लिंग और उसके बीच में हीरा जड़ा हुआ था। आज तक उस रहस्य को कोई नहीं जान पाया। भगवान बाप सुप्रीम सोल शिव ने बताया- ''न मैं पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ।'' (मु.ता.22.5.71 पृ.2 मध्यांत) तो कोई बताए कि जो पूज्य रूप मंदिरों में शिवलिंग रखा हुआ है और सोमनाथ के मंदिर में भी शिवलिंग ही था, वो किसकी यादगार है? (किसी ने कहा- साकार की यादगार) वो पूज्य रूप शिवलिंग की मूर्ति, जिसके लिए गीता में भी कहा है-''अव्यक्तमूर्तिना।'' (गीता 9/4) कैसी मूर्ति? अव्यक्त भी है और मूर्ति माना मूरत भी है, दोनों है। साकार और निराकार का मेल है। वो लिंग अव्यक्त इसलिए है कि उसमें शरीर की कोई भी इन्द्रिय- नाक, आँख, कान, हाथ, पाँव कुछ भी नहीं दिखाया गया। इसलिए अव्यक्त है और सोमनाथ मंदिर में उस भावना का असली रूप दिखाया गया कि उस लिंग-रूप में, बड़े-रूप में, साकार-रूप में हीरा जड़ा हुआ था। वो हीरा किसकी यादगार? (किसी ने कहा- निराकार शिव की यादगार) ज़ोर से बोलो। (पुनः किसी ने कहा- निराकार शिव बाप की यादगार) निराकार शिव की यादगार! हीरा पत्थर होता है या नहीं होता है? जैसे नौ रतन पत्थर होते हैं या नहीं होते हैं? पत्थर होते हैं। शिव कभी पत्थर-बुद्धि बनता है क्या? (किसी ने कहा- नहीं बनता) तो बताओ, वो हीरा किसकी यादगार है? (किसी ने कहा- शिव स्वरूप और हीरो पार्टधारी) हाँ! हीरा, हीरो पार्टधारी की यादगार है। वो हीरो पार्टधारी पहले पुरुषार्थी जीवन में है। पुरुषार्थी का मतलब ही है- आत्मा के अर्थ पुरुषार्थ करने वाला। जो भी करेगा, किसके लिए करेगा? आत्मा के कल्याण के लिए; शरीर के कल्याण के लिए कोई परवाह नहीं। पाना था सो पा लिया, अब कुछ पाने का नहीं रह गया।

आत्मा के अर्थ क्या पाना है? आत्मा के अर्थ पाना है कि आत्मा जन्म-जन्मांतर सुख में रहे, दुःख में न आए; आत्मा शांत रहे, अशांति में न आए। तो शांति का वर्सा माना मुक्ति का वर्सा- दुःख-दर्दों से मुक्ति। ये वर्सा 500-700 करोड़ मनुष्यात्माओं में से सभी को प्राप्त होता है। सभी आत्माएँ शरीर छोड़ करके आत्मलोक में जाके बैठती हैं और शांत रहती हैं; लेकिन बाप का मुक्ति से भी ऊँचा एक और वर्सा है- जीवनमुक्ति। तो निराकार बाप/सुप्रीम सोल बाप, निराकारी बाप से निराकारी वर्सा मिलेगा या साकारी वर्सा मिलेगा? (किसी ने कहा- निराकारी वर्सा) निराकारी बाप का वर्सा क्या है? (किसी ने कहा- ज्ञान) तो निराकारी बाप, ज्ञान का जो सार है, उस सार का वर्सा पहले-2 देता है। वो सार क्या है? (किसी ने कहा- मैं आत्मा ज्योतिबिन्दु) ये ज्ञान का सार है। इस सार में सभी मनुष्यमात्र को टिकना है कि मैं आत्मा ज्योतिबिंदु हूँ, अणु से भी अणु-रूप हूँ और आत्मलोक की रहने वाली हूँ। आत्मलोक की रहने वाली जो आत्माएँ हैं, वो बाप के घर के बच्चे हैं। बाप है सुप्रीम सोल। वो सुप्रीम सोल शिव सदाकाल कहाँ का वासी है? परमधाम का वासी है। भले इस सृष्टि पर भी आता है, तो भी बुद्धि रूपी आत्मा कहाँ धरी रहती है? परमधाम में धरी रहती है। तो वो है मुक्ति का दाता, आत्मज्ञान दे करके इस देह और देह की दुनियाँ से मुक्त कराता है। रास्ता बताता है कि तुम अपन को आत्मा समझो। इस प्रैक्टिस में जो आगे जाएगा, वो पहले-2 इस देह और देह की दुनियाँ से, देह के संबंधों से, देह के पदार्थों से, देह के संपर्कियों से सदाकाल के लिए मुक्त हो जाएगा और मुक्त होने के बाद इस दुःख की दुनियाँ में वापस नहीं आएगा। ये वर्सा- मुक्तिधाम का वर्सा, निराकारी धाम का वर्सा, निराकार आत्माओं का बाप देता है। धनवान बाप काहे का वर्सा देगा? धन का वर्सा देगा। वो निराकारी बाप जीवनमुक्ति का वर्सा दे सकता है? वो स्वयं जीवनमुक्त है? 84 जन्मों के जीवन में रहते हुए दुःख-अशांति से मुक्ति का वर्सा दे सकता है? नहीं दे सकता। बाप जैसे धन का भण्डार वाला होगा, वैसे ही धन का भण्डार देगा; इसलिए वो निराकार शिव सिर्फ़ रास्ता बताता है- हे जन्म-जन्मांतर जीवन धारण करने वाली आत्माओं! मैं तुमको रास्ता बताता हूँ, श्रीमत देता हूँ। उस श्रीमत पर जो जितना चलेगा, वो उतना जीवन में रहते सुख-शांति का, जीवनमुक्ति का वर्सा ले सकेगा और वो जीवनमुक्ति का वर्सा लेने वालों में भी जो अव्वल नंबर होगा, वो ही अव्वल नंबर, दुनियाँ में जो अव्वल नंबर धर्म है- सत्य सनातन धर्म/आदि सनातन धर्म, उस धर्म का प्रवर्तक होगा, धर्म का स्थापक होगा।

अब बताओ, दुनियाँ में सभी धर्म वाले अपने धर्म के स्थापक को जानते हैं, मानते हैं; क्रिश्चियन्स, क्राइस्ट को मानते हैं; मुसलमान, मोहम्मद को मानते हैं; इस्लामी, इब्राहीम को मानते हैं; बौद्धी, बुद्ध को मानते हैं। भारतवासियों को ये सब-कुछ भी पता नहीं रहता, विदेशियों-विधर्मियों के संग के रंग में आते-2 ऐसे उनके संग के रंग में रंग जाते हैं कि उन्हें अपने धर्मपिता का भी ज्ञान नहीं रहता, धर्म-पुस्तक का भी ज्ञान नहीं रहता। अरे! धर्म को भी भूल जाते हैं। कह देते हैं 'हिन्दू धर्म'। ये हिन्दू धर्म, इसकी शूटिंग करने वाले कौन हैं? कोई ग्रुप तो होगा, जिसने पहले-2 अपने को 'हिन्दू' कहना शुरू किया? हिन्दू का अर्थ क्या है? (किसी ने कहा- हिंसा को जो दूर करने वाले) 'हिं' माने हिंसा, 'दू' माने दुईते- दूर करने वाला; हिन्दू माने हिंसा को दूर करने वाले। ब्राह्मणों की संगमयुगी शूटिंग की दुनियाँ में जब सुप्रीम बाप डायरेक्टर बन करके आते हैं, पर्दे के पीछे रह करके गुप्त पार्ट बजाते हैं, तो हिन्दू की शूटिंग कौन करता है कि हम काम-विकार की हिंसा को दूर करने वाले हैं, हम स्थूल हिंसा को भी दूर करने वाले हैं और दुनियाँ में जो भी हैं, चाहे वो अपने को एडवांस पार्टी क्यों न कहलाते हों, वो सब हिंसा को बढ़ाने वाले हैं? बताओ। ब्राह्मणों की नौ कुरियाँ होती हैं, कौन-से ब्राह्मण हैं नौ कुरियों के ब्राह्मणों में से, जो जन्म-जन्मांतर द्वैतवादी द्वापरयुग से विदेशियों-विधर्मियों के संसर्ग-संपर्क में आ करके कन्वर्ट होते रहे? इस्लाम धर्म में कन्वर्ट हुए, बौद्ध धर्म में कन्वर्ट हुए, क्रिश्चियन धर्म में कन्वर्ट हुए। जो भी धर्मपिता आया, उनके पीछे-2 उनके धर्मों में कन्वर्ट

होते रहे। बताओ, ऐसा वो ग्रुप कौन-सा है, अभी देखने में आता है? (किसी ने कहा- चंद्रवंशी) हाँ! ज्ञान-चंद्रमा (माता) की गोद में खेलने वाले वो बच्चे, जो गोद अर्थात् कुखवंशावली हैं। जिनको कोख का बड़ा नशा है- हमने मम्मा-बाबा की गोद ली है! तुम तो कल के बच्चे हो, तुम हमको क्या ज्ञान सुनाओगे! ऐसे-2 अहंकार में आ करके बोलने वाले हैं। वो ब्राह्मण अपन को समझते हैं कि हम हिंसा को दूर करने वाले हैं और दुनियाँ में सब हिंसा को बढ़ाने वाले हैं। तो वही अपन को हिंदू कहलाने वाले दूसरे-2 धर्मों में कन्वर्ट होते रहे। जैसे मनुष्य-सृष्टि के वृक्ष में, कोई डालियाँ हैं जो दाईं ओर के भारतीय धर्मों में झुक गईं; जैसे- बौद्ध धर्म, संन्यास धर्म, सिक्ख धर्म और कोई डालियाँ हैं जो बाईं ओर के विदेशी धर्मों में झुक गईं, कन्वर्ट हो गईं। बीच में एक ही तना है असल सूर्यवंशियों का, जो आदि से लेकर अंत तक ऊपर सीधा जाता है, जिसे मुख्य तना कहा जाता है।

भारत में भी तीन प्रकार के सम्प्रदाय बहुत प्रसिद्ध हैं- ब्रह्मसमाजी, ब्रह्मा के फॉलोअर्स; वैष्णवपंथी, विष्णु के फॉलोअर्स और शैव सम्प्रदाय, जो शिव के फॉलोअर हैं, एकलिंग भगवान को मानने वाले हैं। जैसे भारत की माताएँ अपने जीवन में एकलिंग स्वामी पति परमेश्वर को मानती हैं या अनेकों का आधार लेती हैं? (किसी ने कहा- एक का आधार) तो ये तीन प्रकार के सम्प्रदाय हैं। अभी भी ब्राह्मणों की दुनियाँ में रिहर्सल हो रही है। भगवान बाप सुप्रीम सोल गॉडफादर जब संगमयुगी शूटिंग में आते हैं, तो तीन मूर्तियों के द्वारा ये तीन प्रकार की ट्यूब्स पहले-2 तैयार होती हैं। अभी फाउण्डेशन पड़ रहा है; इसलिए गीता में लिखा है- ''चातुर्वर्ण्यम् मया सृष्टम् गुणकर्म विभागशः।'' (गीता 4/13)- हर आत्मा जो एक्ट करती है, उसकी एक्ट से उसके गुणों का पता चलता है, कर्मों का पता चलता है और उसके नीच वा ऊँच विभाग का पता चलता है। भगवान बाप डायरेक्टर पर्दे के पीछे रह करके चार युगों की शूटिंग काल संगमयुग में जन्म लेने वालीं, ईश्वरीय ज्ञान में नं०वार रिहर्सल पर उतरने वालीं, चार प्रकार के वर्णों की आत्माओं की रचना कर रहे हैं। कोई सतयुग में उतरती हैं, देवता बनती हैं; कोई त्रेता में उतरती हैं, क्षत्रिय बनती हैं; कोई द्वापर में उतरेंगी, विषियस वैश्य बनेंगी; कोई कलियुग में उतरती हैं, शूद्र बनेंगी। इन चारों वर्णों की रचना अभी हो रही है। कोई मनुष्यात्माएँ कलियुगी धर्मपिताओं को फॉलो करेंगी, कोई मनुष्यात्माएँ द्वैतवादी द्वापर में धर्मपिताओं को फॉलो करेंगी, कोई त्रेता में क्षत्रिय वर्ण में जाएँगी और कोई सतयुग में देवता वर्ण में आवेंगी और संगमयुग में इनसे भी ऊँची एक और स्टेज है, जो चारों युगों की प्राप्ति में सर्वश्रेष्ठ है, जो बोला है कि कोई-2 आत्माएँ हैं जो 82/83 जन्म तक भी सुख में रहती हैं।

ये सुख-शांति का वर्सा जितना जो लेना चाहे अभी संगमयुग में, साकार और निराकार के मेल से ले सकते हैं। साकार शरीर रूपी लिंग है माता और निराकारी ज्योतिबिंदु स्टेज बनाने वाली हीरो पार्टधारी आत्मा है पिता। निराकार माने बीज बाप, साकार माने माता परंब्रह्म। वो निराकार संपन्न बीज माता में आता है, तब सृष्टि रूपी परिवार चलता है। तो वो साकार-निराकार का मेल, शिवलिंग द्वारा हमको अनेक जन्मों का मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिल रहा है। अब जो जितना चाहे उतना ले सकता है।

तो बताया, पुजारी बनकर जो अपन को ही माथा टेकते हैं, वो कौन हैं, जो संगमयुग में भी शूटिंग करते हैं और वो कौन है, जो कोई साकार को माथा नहीं टेकता? माथा टेकना माने बुद्धि झुकाना। संगमयुगी शूटिंग काल में जो कोई के सामने नहीं झुकता, वो ब्रॉड ड्रामा के चारों युगों में भी कोई के सामने नहीं झुका होगा। द्वापर-कलियुग में कोई ऐसे पार्टधारी मनुष्यों के सैम्पल हैं, जिन्होंने सारे विश्व के चुने हुए कितने भी बड़े-ते-बड़े महत्वाकांक्षी- हिटलर, नैपोलियन, अलेक्जेण्डर, जो सारे विश्व को विजय करने के महत्वाकांक्षी हुए हों, उनके सामने भी कभी माथा नहीं टेका है? ऐसे हिस्ट्री में हुए हैं या नहीं हुए हैं? (किसी ने कहा- हुए हैं) जो हुए हैं, वो कभी किसी देहधारी के

पुजारी नहीं बनते और निराकार बिंदु आत्मा की तो पूजा होती ही नहीं। निराकार जो सदैव है, सदाशिव है, वो पूज्य बनता है क्या? (किसी ने कहा- नहीं बनता) पुजारी बनता है? (किसी ने कहा- नहीं) तो उसकी पूजा का सवाल ही नहीं! उसको तो पहचान करके याद किया जा सकता है और वो याद भी ग्रेट फादर्स कहे जाने वाले धर्मपिताओं की सशक्त आत्माएँ कर सकती हैं; सभी आत्माएँ निराकार को याद नहीं कर सकतीं। निराकार को याद करना सहज है या साकार को याद करना सहज है? (किसी ने कहा- साकार को) क्यों? क्योंकि 63 जन्म साकार शरीरों से सुख लेने का का अभ्यास पड़ा हुआ है। 63 न कहें, 84 जन्म भी कहें। देवताएँ भी तो शरीर की इन्द्रियों से ही सुख लेते हैं। तो जो जन्म-जन्मांतर साकार को याद करने का अभ्यास पड़ा हुआ है, वो सहज ही नहीं छूटता है; इसलिए बताया कि जब सारी सृष्टि का अंत होगा, मनुष्यमात्र की आत्माएँ आत्मिक स्टेज में तो टिकेंगी; लेकिन सभी तो अपने पुरुषार्थ से नहीं टिकेंगी। उनमें आठ तो ऐसी श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, जिनके लिए बाप कहते हैं- ''मैं तुमको नयनों पर बिठाकर ले जाऊँगा।'' (मु.ता.24.12.68 पृ.4 आदि) नैनों पर कैसे बिठाया जाता है? प्यार से बिठाया जाता है या लाल-2 आँखें करके बिठाया जाता है? प्यार की बात है। बाक़ी 7/7½ अरब कुछ-न-कुछ धर्मराज की सज़ाएँ खा जाते हैं। कौन बनता है धर्मराज? वो ही धर्मराज बन सकता है, जिसने धारणाएँ की हों। देवताओं में ज़्यादा धारणा होती है या मनुष्यों में ज़्यादा धारणा होती है या राक्षसों में ज़्यादा धारणा होती है? (किसी ने कहा- देवताओं में) देवताओं में पहला पत्ता कौन? प्रजापिता? (किसी ने कहा- नहीं, कृष्ण वाली आत्मा) हाँ! जो कृष्ण वाली आत्मा है, सतयुग का पहला नारायण है, वो धारणाओं में सबसे उत्तम है। धारणाओं में मुख्य धारणा कौन-सी है? (किसी ने कहा- सहनशीलता) इसलिए बोला- 'मन्मनाभव', मेरे मन में समा जा। कौन-सी आत्मा ने बोला? (किसी ने कहा- प्रजापिता वाली आत्मा ने) शिव को तो मन होता ही नहीं, वो क्यों बोलेगा- मेरे मन में समा जा या मेरे दिल में समा जा? इस दुनियाँ में भी कोई राजा हुए हों, महाराजा हुए हों, कोई भी मनुष्यमात्र हुए हों, उनका दिल आख़रीन जीवन में अपने बड़े बच्चे की ओर जाता है। सारा दिल किसको दे देते हैं? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे को) माता को भी नहीं देते; क्योंकि माता भी अपना सब-कुछ किसको अर्पण कर देती है? बड़े बच्चे को अर्पण कर देती है। तो ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई? (किसी ने कहा- संगमयुग से) शिवबाप जिस साकार तन में प्रवेश करके मुकर्रर रूप से पार्ट बजाते हैं, वो मनुष्य-सृष्टि का बीज-रूप बाप है। उस बीज से जो पहला पत्ता निकलता है, वो कृष्ण वाली आत्मा ही उसका दिल है; इसीलिए मनुष्य-सृष्टि का बाप, निराकारी बाप शिव से जो भी अखूट ज्ञान का वर्सा लेता है, उस ज्ञान के वर्से को पहले-2 किसको अर्पण करता है? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे को) कौन है बड़ा बच्चा? (किसी ने कहा- कृष्ण वाली आत्मा) कृष्ण बच्चे को अर्पण करता है। सारी पढ़ाई किसके लिए है? कृष्ण बच्चे के लिए। सारा ईश्वरीय ज्ञान का क्लैरिफिकेशन सुप्रीम टीचर के रूप में किस बच्चे के लिए है? कृष्ण बच्चे के लिए। तो सुप्रीम टीचर भी है और जीवनमुक्ति का वर्सा देने वाला सुप्रीम बाप भी है। ज्ञान का वर्सा देने वाला है या जीवनमुक्ति का वर्सा देने वाला है? अरे! अगर ज्ञान का वर्सा देने वाला हो, तो उससे ऊपर भी तो कोई बैठा है, कौन? सुप्रीम सोल बाप शिव, जो सुप्रीम गॉडफादर कहा जाता है। वो ज्ञान का वर्सा देने वाला है या जिसमें प्रवेश करता है, वो ज्ञान का वर्सा देने वाला है? वो शिव ज्ञान का वर्सा देने वाला है और जिसमें प्रवेश करता है, वो उस ज्ञान को प्रैक्टिकल रूप देता है, प्रैक्टिकल रूप देने के बाद जीवनमुक्ति का वर्सा देने वाला कहा जाता है। मनुष्य-सृष्टि का बाप है, तो बाप से कुछ मिलता है या नहीं मिलता है? (किसी ने कहा- मिलता है) क्या मिलता है? वर्सा मिलता है, बाप से अपने श्रेष्ठतम पार्ट की प्रत्यक्षता रूपी जन्म मिलता है।

हर मनुष्यात्मा को अपने अनेक जन्मों में से, जो पहला-2 मनुष्य-सृष्टि में सर्वोपरि जन्म है, उस पहले जन्म की जानकारी मिलती है। उस जानकारी के आधार पर वो फिर पुरुषार्थ करता है कि हमें ये पद मिलने वाला है। जैसे- दादा लेखराज ब्रह्मा को साक्षात्कार हुए। उन साक्षात्कारों का सार-रूप में जिसने क्लैरिफिकेशन दिया, वही बाप हो गया और प्रैक्टिकल जीवन में उन साक्षात्कारों को अनुभव किसने किया- जिसको साक्षात्कार हुए उसने अनुभव किया या किसी दूसरे ने अनुभव किया? जिसको अनुभव हुआ, उसको पक्का निश्चय बैठ गया कि स्वर्ग का साक्षात्कार हुआ माने स्वर्ग में मैं पहला प्रिंस बनने वाला हूँ, विनाश का साक्षात्कार हुआ माना बुद्धि में बैठ गया- इस दुनियाँ का विनाश होने वाला है, सफेदपोश का साक्षात्कार हुआ माना बुद्धि में बैठ गया कि मैं ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाने वाला हूँ, फिर विष्णु का साक्षात्कार हुआ, तो बुद्धि में बैठा- ब्रह्मा सो विष्णु बनता है। तो पहले-2 पत्ते को ज्ञान के सार के आधार पर निश्चय का साक्षात्कार हो गया, जैसे वर्सा मिल गया और उसके आधार पर उन्होंने अपने जीवन में जो महामंत्र है, क्या? (किसी ने कहा- मन्मनाभव) 'मन्मनाभव' महामंत्र तो है; लेकिन वो महामंत्र पहले-2 किसके ऊपर लागू होता है? 'मेरे मन में समा जा'- किसने बोला? प्रजापिता वाली आत्मा ने बोला- मेरे मन में अर्थात् दिल में समा जा। उसके दिल में क्या है? नई सतोप्रधान सृष्टि का आरम्भ करना, नई राजधानी स्थापन करना। तो नई राजधानी का वर्सा कौन लेगा? किसके ऊपर उस बाप का दिल आया? (किसी ने कहा- कृष्ण बच्चा) सृष्टि रूपी वृक्ष का पहला पत्ता बड़ा बच्चा है, वो ही दिल हो गया। इसलिए बताया कि इस 'मन्मनाभव' के मंत्र को प्रैक्टिकल जीवन में जो ब्रह्मा की तरह फॉलो करेगा, वो ही ऊँचे-ते-ऊँचा देवता बनेगा। क्या विशेष पुरुषार्थ करना है? कौन-सी धारणा का पुरुषार्थ करना है? (किसी ने कहा- सहनशीलता) जिस सहनशीलता से ही नई दुनियाँ की राजधानी स्थापन होगी। अगर सहन नहीं किया, सामना करना शुरू कर दिया, तो राजधानी में नहीं आ सकेंगे। कहाँ सामना करना है, कहाँ सहन करना है- ये भी परखना है। जो ज्ञान-सूर्य के परिवार वाले हैं, मनुष्य-सृष्टि की जो उत्तम-से-उत्तम पीढ़ी है, उत्तम-से-उत्तम राजधानी है, जहाँ माला रूपी संगठन बनता है- एक मात-पिता के कंबाइंड रूप शिवलिंग के स्नेह के धागे में पिरोया हुआ आत्मा रूपी मणकों का संगठन, उस परिवार के भांतियों को पहचानना और उनके प्रति सहनशीलता को धारण करना- चाहे वो छोटे बच्चे हैं, चाहे वो बड़े बच्चे हैं, उन परिवार के भांतियों के बीच सहनशील बनना है और जो परिवार के भांती नहीं हैं, दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होने वाले हैं, उनके प्रति सामना करने वाली महाकाली का रूप धारण करना अथवा रुद्र का साक्षात् विकराल रूप धारण करना।

बात चल रही थी कि धर्मराज का पार्ट कौन बजाएगा? धर्म का राजा कौन, जिसने सर्वोत्तम धर्म की धारणा को पहले-2 धारण किया? ऐसा सहन करके दिखाया, जैसा दुनियाँ में आज तक कोई माता ने सहन करके नहीं दिखाया होगा। सभी माताएँ, ब्रह्मा माता के मुकाबले, उस सहनशीलता की धारणा में नंबरवार हो जाती हैं; इसलिए जब सृष्टि का अंतिम काल आता है, वो माताएँ ही महाकाली की भुजाएँ बनती हैं और महाकाली बन करके दुनियाँ के सारे असुरों को खलास कर देती हैं। सारी दुनियाँ में सारे-के-सारे 500-700 करोड़, असुर-ही-असुर भरे पड़े हैं। सारी दुनियाँ पतित बन जाती है, तामसी बन जाती है। सबके ऊपर राज्य करती है, जो खास सिक्ख धर्म में गायन है- 'राज करेगा खालसा'। उस माता का नाम 'प्रकृति' भी है। ये जोड़ी है- रुद्र रूप पुरुष और प्रकृति रूपा महाकाली की। पुरुष बाप है और प्रकृति माता है। प्रकृति का अर्थ ही है- 'प्र' माने प्रकृष्ट रूप, कृति माने रचना। भगवान बाप जब नई सृष्टि रचने के लिए आते हैं, तो पहले-2 बाप का रूप धारण करते हैं; किसके द्वारा? अरे! सुप्रीम सोल बाप आते हैं, मनुष्य-सृष्टि रचते हैं, तो मनुष्य-सृष्टि का बीज-रूप बाप प्रत्यक्ष होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? (किसी ने कहा- होना चाहिए) वो सुप्रीम सोल ब्रह्ममुख से निकली वेदवाणी मुरली में ही बोलता है- मैं आशिक हूँ,

तुम्हारे ऊपर आशिक बन करके आता हूँ। तुम माशूक हो। ''बरोबर शिवबाबा बाबा है। उनको माशूक भी कहा जाता है। सभी मनुष्यमात्र आशिक हैं उस माशूक के।'' (मु.ता.3.7.88 पृ.1 अंत) बताओ, कौन माशूक है? सारे भारत तो क्या सारे विश्व का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रजापिता की आत्मा माशूक है। माशूक स्त्री होती है या पुरुष होता है? (किसी ने कहा- स्त्री) तो उसे परम्ब्रह्म रूपा स्त्री बनाया, पहली-2 रचना बनाया। अब सुप्रीम सोल गॉडफादर जिसका आशिक बनेगा, तो सारी दुनियाँ को उसका आशिक बनना ही पड़े या नहीं बनना पड़े? (किसी ने कहा- बनना पड़े)

तो बोला, तुम सब बच्चे हो आशिक और शिवबाबा है माशूक। शिवबाबा माशूक है या शिवबाप माशूक है? (किसी ने कहा- शिवबाबा) तो शिवबाबा को माशूक बनाया। बाबा साकार हुआ या निराकार हुआ? (किसी ने कहा- साकार) तो वो साकार में मनुष्य-सृष्टि का बीज है, बाप है, तो उसके ऊपर भी ज़िम्मेवारी आ जाती है- जो बाप का धंधा सो बच्चे का धंधा; नई सृष्टि का निर्माण करना, गॉड इज़ ट्रुथ सत् बाप कहा जाता है, उसी सत्यं शिवं सुन्दरम् की सात्विक सृष्टि का निर्माण करना। तो इस काम के लिए प्रवृत्ति को चुनेगा या निवृत्ति को चुनेगा? प्रवृत्ति चाहिए। तो कौन-सी आत्मा प्रवृत्त बनती है? (किसी ने कहा- जगदम्बा) हाँ! जिसे जगदम्बा कहा गया, सारे जगत की अम्बा। सारे जगत में सिर्फ़ चैतन्य हैं या जड़ भी है? (किसी ने कहा- जड़) इस जगत में जड़-ही-जड़ है या चैतन्य आत्माएँ भी हैं? चैतन्य आत्माएँ भी हैं। आत्मा अलग चीज़ और शरीर अलग चीज़। जैसे प्रजापिता जिसे कहा गया, उसमें जड़ शरीर भी है और चैतन्य आत्मा भी है।

जो सुप्रीम सोल बाप है, वो किस पर फिदा होता है- परम+आत्मा पर फिदा होता है या शरीर पर फिदा होता है? (किसी ने कहा- आत्मा पर) क्यों? (किसी ने कहा-हीरो पार्ट बजाता है) क्योंकि इस चार सीन वाले युगों के सृष्टि रूपी रंगमंच में एक ही आत्मा है, जो आदि से लेकर कलियुग के अंत तक आसुरी संस्कार वालों से टकराती है। मनुष्य-सृष्टि में कोई ऐसी आत्मा होगी या नहीं होगी? (किसी ने कहा- होगी) ज़रूर होती है। वो एक ही आत्मा है, जो सत्य के लिए सतत लड़ाई लड़ती है; बाक़ी जो भी धर्मपिताओं से लेकर मनुष्यात्माएँ हैं, उनके फॉलोअर्स तक भी, सब लोक-लाज़ में दब जाते हैं- ये क्या कहेगा, वो क्या कहेगा, ऐसा कैसे हो सकता है, ऐसा तो कोई नहीं कर सकता! इसलिए लोक माने संसार, दुनियाँ वालों की लोक-लाज़ में जो मर जाते हैं, वो कमज़ोर हो जाते हैं और जो एक सुप्रीम सोल गॉडफादर शिव की लाज़ रखता है, वो ही विश्वविजयी बनता है। तो सुप्रीम सोल तो त्रिकालदर्शी होने के कारण जानता है कि इस सृष्टि में सदा सत् आत्मा कौन है, जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर एक ही सत् है और सब असत् हैं, सारे धर्मपिताएँ असत् हैं। सत्य एक ही होता है। यज्ञ के आदि में भी स्थापना के साथ-2 यज्ञकुण्ड से विनाशज्वाला भी प्रज्वलित हुई। धोबीघाट की बात को ले करके झगड़ा शुरू हो गया, सारे विरोध में आने लगे। पहले-2 दादा लेखराज ब्रह्मा की आत्मा भयंकर लड़ाई सामने देख कर चुपके से भाग खड़ी हुई। कराची में जाकर पता नहीं, कौन-से बंगले में छिप गए। जो आदि में सो अंत में। सन् 1998 में भी वो ही शूटिंग होती है। जो जगतमाता का टाइटिल लेने वाली 'जगदम्बा' कही जाती है, उसे सारे जगत की अम्बा कहो या ब्रह्मा कहो; क्योंकि जगदम्बा के ही मस्तक में महाकाली रूप में क्या दिखाते हैं? चंद्रमा दिखाते हैं। तो जब सन् 1998 में द्वापर के अंत की शूटिंग होती है, तब कृष्ण वाली आत्मा प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेती है, 15 अगस्त, जन्माष्टमी के दिन जेल से मुक्त होती है, तो उस संगठन में से दाढ़ी-मूँछ वाले ब्रह्मा का पूज्य रूप (ब्रं+मां) जगदम्बा माता गायब हो जाती है, अण्डरग्राउण्ड हो जाती है; आदि सो अंत की तरह भाग जाती है या ठहर जाती है? (किसी ने कहा- भाग जाती है) अब जिस परिवार की मुख्य सदस्य, मुख्य सहयोगी माता ही भाग जाए, उस परिवार का क्या हाल होगा? विघटन हो जाता है। तो विघटन हुआ। एक ही रह गया माना सन् 1942 में भी एक आत्मा एक तरफ़ और सारी दुनियाँ दूसरी तरफ़ हो गई,

जो शास्त्रों में लिखा है कि ब्रह्मा द्वारा तीन बार ब्राह्मण-सृष्टि रची गई और तीनों बार रिजैक्ट कर दिया। 1936 में रची गई, 1942 में रिजैक्ट हो गई। 1947 में ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमारियों की सृष्टि रची गई- ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। पहले क्या नाम था? (किसी ने कहा- ऊँ मण्डली) नाम भी बदल गया, स्थान भी बदल गया। दूसरी बार रची गई सृष्टि का 1969 से विघटन शुरू हुआ। उस सृष्टि का भी जो मुखिया था- दादा लेखराज, 18 जनवरी, 1969 को देहावसान हो गया। जैसे पहली बार 1942 में विघटन शुरू हुआ और 1947 में ब्राह्मणों की दूसरी नई दुनियाँ की शुरुआत स्पष्ट देखने में आई। ऐसे ही 1969 में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुखिया का देहावसान हुआ और 6/7 साल के बाद 1976 में नई सृष्टि की घोषणा, जो 1966 में पहले ही हो चुकी थी, जो सुप्रीम सोल बाप ने ब्रह्मा के द्वारा मुरलियों में बोला था- ''इन ल॰ना॰ का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (सन् 66 की वाणी है) (मु॰4.3.70 पृ॰3 मध्य) माना सन् 1976 में (हुआ)। तो सन् 1976 में ब्राह्मणों की नई दुनियाँ, एडवांस पार्टी की शुरुआत हो गई। आप मुये मर गई दुनियाँ, नई दुनियाँ की शुरुआत हुई। ब्राह्मणों का नया संगठन बना और पुराने संगठन का विघटन होने लगा। विघटन का मतलब? पुराना जो संगठन रूपी ब्राह्मणों का किला था, उसमें से एक-2 करके ईंटें खिसकती चली गईं। किले की ईंटें एक-2 करके खिसकती चली जाएँ, तो आख़रीन किले का क्या हाल होगा? किला गिर जाएगा। तो वो 40 वर्ष भी पूरे हो गए, जो बोला था- तुम बच्चों को; किन बच्चों को? तुम बच्चों को माने शिव सुप्रीम सोल बाप के सन्मुख बैठने वाले बच्चों को बोला- ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता.6.10.74 पृ.2 अंत) तो सन् 1976 से जो एडवांस ज्ञान शुरू होता है, ज्ञान का विस्तार शुरू होता है, जैसे भक्तिमार्ग में दिखाया गया- पहले-2 वेद निकलते हैं 'वेद वाणी'। वेद किसने लिखे? कोई नाम है? (किसी ने कहा- वेदव्यास) वो ही (एक) आत्मा है। बाद में वेदों की भाँति-2 की व्याख्याएँ होने लगीं। व्याख्या में पहले-2 आरण्यक निकले, फिर शतपथ ब्राह्मण आदि निकले, फिर उपनिषद् निकले और फिर उपनिषदों की भी व्याख्याएँ पुराण निकले- 'भागवत महापुराण', 'महाभारतमहापुराण' आदि-2। अनेक प्रकार की जो ये व्याख्याएँ लिखी गईं, इनका भी आरम्भकर्ता कौन था? वो ही भारत, जो ज्ञान की रोशनी में सदा रत रहता है। वो आत्मा ज्ञान को, जो ईश्वरीय पढ़ाई का एक अव्वल नंबर सब्जेक्ट है या दो नंबर/तीन नंबर/चार नंबर का सब्जेक्ट है? अव्वल नंबर सब्जेक्ट, उसको धारण करने में सबसे आगे जाता है; इसीलिए दिखाते हैं कि ब्रह्मा के पहले-2 चार मानसी पुत्र हुए। उनमें से ज्ञान में सबसे बड़ा होने के कारण सनतकुमार सनातन धर्म का स्थापक साबित हो गया, जो योगीश्वर/ज्ञानीश्वर कहा जाता है। अब बताओ, योगीश्वर एक होगा या तीन-2 होंगे? (किसी ने कहा- एक) शंकर को भी योगियों का ईश्वर कहा जाता है, कृष्ण को भी योगीराज कहा जाता है और सनतकुमार को भी योगियों का ईश्वर कहा जाता है। तो तीनों एक के ही अलग-2 नाम हैं या अलग-2 आत्माएँ हैं? एक ही आत्मा है।

जो ज्ञान बीज का वर्सा धारण करने वाली आत्मा है, उस मनुष्य-सृष्टि के चैतन्य बीज में से पहली-2 चेतन आत्मा रूपी जड़ कौन-सी निकलती है? जड़ कहो, आधार कहो, धरणी कहो। उसका नाम 'जड़' क्यों कहा गया? जड़त्वमयी है। वो कौन है? (किसी ने कहा- जगदम्बा) 5-7 अरब मनुष्य-आत्माओं के बीच वो जड़त्वमयी कौन है? 5 जड़ तत्वों का संघात- धरणी को माता कहा जाता है। वो धरणी माता/अव्वल नं॰ सीता माता, जड़त्वमयी धरणी से ही जन्म लेती है और अंत में धरणी में ही समा जाती है। सीता अर्थात् शीतल; नहीं तो धरणी के अंदर तो भयंकर अग्नि भरी हुई है। जब भूकंप आते हैं तो क्या निकलता है? धरणी आग उगलती है, जिसे कहा जाता है- लावा। जैसे लोहा जब पूरा पिघल जाता है, तो एकदम अग्नि की तरह बहने लगता है। तो धरणी, माता तो है; लेकिन जड़त्वमयी है या चैतन्य है? (किसी ने कहा- जड़) उस जड़ को चलाने वाली कोई आत्मा चैतन्य होनी चाहिए या नहीं होनी

चाहिए? (किसी ने कहा- होनी चाहिए) वो कौन है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा वाली आत्मा) नहीं! ब्रह्मा तो शीतल चंद्रमा है। चंद्रमा, धरणी का उपग्रह/बच्चा है- धरणी से ही निकलता है और धरणी की गोद में ही बैठ जाता है। चंद्रमा, सीता नहीं है। सीता माने शीतल। चंद्रमा भी शीतल; सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता; क्योंकि घटता-बढ़ता रहता है और धरणी भी शीतल नहीं कही जा सकती; क्योंकि अंदर में भयंकर अग्नि भरी पड़ी है। तो उस जड़ धरणी की आत्मा कौन है, जो उसके अंदर निवास करती है? (किसी ने कहा- लक्ष्मी) जैसे हर मनुष्य के दो रूप हैं- एक आत्मा और एक शरीर। ऐसे ही जो मनुष्य-सृष्टि की माता है, उसमें एक शरीर धारिणी है 'जड़' और दूसरी 'आत्मा'; इसीलिए दोनों को मिला करके महालक्ष्मी कहा जाता है अर्थात् महागौरी और महाकाली, दोनों के संस्कार मिलकर एक होते हैं तब महालक्ष्मी कही जाती है।

अब बताओ, उस महालक्ष्मी में से कृष्ण वाली आत्मा को जन्म देने वाली माता कौन? जो लक्ष्मी कही जाती है, वो लक्ष्मी ही यज्ञ के आदि में, जब के लिए बताया कि मैं जब आता हूँ तो तीन मूर्तियों के साथ आता हूँ। कौन-कौन-सी? (किसी ने कहा- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) उनमें एक बर्फ जैसी जाम बुद्धि ब्रह्मा है, एक विष्णु की मूर्ति और एक शंकर की मूर्ति। उनमें जो ब्रह्मा वाली आत्मा है, चाहे वो दादा लेखराज रूपी अपूजनीय ब्रह्मा हो और चाहे वो अंत में पूजनीय जगदम्बा हो, दोनों ही बड़े-ते-बड़ी माँ हैं ना! दोनों के संस्कारों में समानता होगी। दोनों बोल-2 करने वाली हैं या समझने वाली भी हैं? बोल-2 करने वाली हैं। तो यज्ञ के आदि में वो एक माता बड़बोली भी थी, जिसकी यादगार में उसकी तामसी मूर्ति में लम्बी जीभ दिखाई जाती है। कहावत में भी कहते हैं- ''अरे भाई! इससे ज़्यादा मुँह न लगाओ। इसकी जीभ बड़ी लम्बी है।'' तो एक माता वो थी यज्ञ के आदि में और दूसरी माता वो थी, जो बोलती कम थी; लेकिन समझती ज़्यादा थी। तो जब प्रजापिता के द्वारा दादा लेखराज ब्रह्मा के साक्षात्कारों का अर्थ सुनाया गया, तो प्रजापिता को वो साक्षात्कार किसने सुनाए- दादा लेखराज ब्रह्मा ने सुनाए या उनकी बड़ी बहन ने सुनाए या कोई और बड़बोली माता थी? (किसी ने कहा- बड़बोली माता ने) उस बड़बोली माता ने हिम्मत की सुनाने की। हिम्मते बच्चे मददे बाप। तो जो बोल-2 करने में हिम्मत करने वाली माता थी, उसने साक्षात्कारों को मनुष्य-सृष्टि के बीज, प्रजापिता के सामने सुना दिया। जिसने मुख से सुना, वो पहला ब्राह्मण हो गया और जिसके मुख से सुना, वो ब्रह्मा माता हो गई, 'बड़ी माँ'। ब्राह्मण कब बनता है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा-मुख से सुने) तो पहला-2 ब्राह्मण कौन हुआ? (किसी ने कहा- प्रजापिता) प्रजापिता पहला-2 ब्राह्मण सो पहला देवता सो पहला क्षत्रिय सो पहला वैश्य सो पहला शूद्र, सो फिर पहला ब्राह्मण। जिस ब्राह्मण चोटी के लिए मुरली में बोला कि तुम बच्चे जब विकारों की दलदल में पूरे ही डूब जाते हो, सिर्फ़ चोटी मात्र ऊपर रहती है, (तब चोटी पकड़ कर खींचता हूँ।)

अब बताओ, दुनियाँ में कौन-से पहाड़ की चोटी है, जो बहुत ऊँची है? (किसी ने कहा- एवरेस्ट) एवर ईस्ट, पूर्वी सभ्यता का प्रतीक। वो एवरेस्ट चोटी, जब महाविनाश होता है, सारी सृष्टि पर जलमई हो जाती है, तो उस जलमई सृष्टि में सब-कुछ डूब जाता है। कौन-सी चोटी बचती है? एवरेस्ट चोटी बचती है, जिस चोटी की भावना में कवि सात्विक भावना धारण करता है, तब गीत गाता है- ''हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह, एक पुरुष भीगे नैनों से देख रहा था प्रबल प्रवाह।'' प्रलय काल की जलमई की बात बताई गई। एक ही बचता है, जो इस मनुष्य-सृष्टि का बीज बाप है। दुनियाँ में भी देखा जाए, कोई परिवार के बच्चों से पूछा जाए कि तुमको किसने जन्म दिया? तो वो बच्चे क्या बोलेंगे? हमारी माता ने जन्म दिया। अरे! माता के अंदर भी तुम कहाँ से आए? माता अपने-आप ही जन्म देती है या माता में भी बीज डालने वाला कोई पिता है? (किसी ने कहा- पिता है) तो वो बीज पिता से आता है। इसी तरह इस मनुष्य-सृष्टि का बीज वो प्रजापिता आदम/ऐडम कहा जाता है, जिसके सम्पूर्ण

स्टेज धारण करने पर सारी सृष्टि जलमग्न हो जाती है, वही कहता है- 'मत्मनाभव', मेरे मन में समा जा। माना मेरा मन कहो या दिल कहो, जो कृष्ण वाली आत्मा है, वो मेरे में पहले-2 बिंदु बन करके समाती है और उस बिन्दु रूपी माता में सारी मनुष्य-सृष्टि को समा जाना है; इसलिए मनुष्य-सृष्टि का वृक्ष के ऊपर दिखाया, उसमें ऊपर कौन है? निराकारी स्टेज की नग्न अवस्था में शंकर बाप दिखाया गया है। वो निराकारी स्टेज ही मंदिरों में शिवलिंग के रूप में पूजी जाती है, जो गीता में लिखा है- ''अव्यक्तमूर्तिना''। (गीता 9/4) उस श्लोक में आया है कि उस अव्यक्त-मूर्ति से सारा संसार जन्म लेता है और सारा संसार प्रलय काल में उसी अव्यक्त-मूर्ति में समा जाता है। जो संसार में विद्वान-पंडित-आचार्य मिसाल देते हैं- अरे! हम सब आत्माएँ पानी के बुलबुले/बुदबुदे हैं। जैसे सागर में ढेर सारे बुदबुदे पैदा होते हैं और वो सागर में ही समा जाते हैं। वो मिसाल देते हैं जड़ सागर का; लेकिन है कौन-से सागर की बात? चैतन्य सागर की बात है। वो चैतन्य सागर, जो धरणी रूपी माता को चारों तरफ़ से अपनी गोद में ले करके बैठा हुआ है; क्योंकि स्थूल सागर भी तीन हिस्से में है और पृथ्वी एक चौथाई हिस्से में है। वो है चैतन्य ज्ञान-सागर और उस चैतन्य ज्ञान-सागर से ही सारी नदियाँ निकलती हैं; परंतु विदेशी नदियाँ पतित-पावनी नहीं हैं; भारत की नदियाँ पतित-पावनी हैं। वो पतित-पावनी नदियाँ, भारत रूपी ज्ञान-सागर से निकलती हैं और उसी में समा जाती हैं और जो ज्ञान-सागर है, वो अलग और ज्ञान-सूर्य अलग। जो ज्ञान-सूर्य है, वो सागर से, पृथ्वी से, नदियों से, पहाड़ों से सदैव डिटैच है और सागर अटैच हो करके रहता है। तो वो चैतन्य ज्ञान-सागर है। उस चैतन्य ज्ञान-सागर से पहले-2 वो जड़त्व बुद्धि वाली धरणी रूपी माता, जो पहली-2 रचना है, जिसका नाम है 'प्रकृति'= प्रकृष्ट+कृति; कृति माने रचना, पाँच तत्वों वाली रचना। बताओ, माँ के पेट में पहले पाँच तत्वों का पुतला तैयार होता है या पहले उसमें आत्मा आती है? क्या होता है? (किसी ने कहा- जड़ पुतला आता है) ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई? संगमयुग से शुरू हुई। संगमयुग में भगवान बाप/सुप्रीम सोल गॉडफादर जब आते हैं, तो जिस तन में मुकर्रर रूप से प्रवेश करते हैं, उसके द्वारा नई सृष्टि में पहले-2 वो प्रकृति का निर्माण करते हैं। पाँच तत्वों रूपी प्रकृति, जो चैतन्य प्रकृति है, वो सबसे पहले मैदान में आती है; परंतु जड़त्वमयी बुद्धि है। मुरली में बोला है- बाप के साथ लम्बे समय तक रहने वाले बच्चे भी बाप को भूल जाते हैं। ''यह कौन आया हुआ है। कितना गुप्त है। 33 वर्ष से साथ रहने वाले भी जान नहीं सकते।'' (मु.ता.4.2.69 पृ.3 मध्यादि) ''मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ रहने वाले भी समझ नहीं सकते हैं।'' (मु.ता.5.2.68 पृ.3 अन्त) तो कैसी बुद्धि कहें? (किसी ने कहा- जड़त्वमयी) वो प्रकृति रूपी मूल माता जड़त्वमयी बुद्धि होने के कारण पाँच विकारों वाली बुद्धि में बड़ी बेटी माया के चम्बे में बड़ी जल्दी आ जाती है। माया जब भगवान बाप के बीज-रूप रुद्राक्ष की स्टेज धारण करने वाले योगी बच्चों से तंग आ जाती है तो क्या करती है? स्थूल शरीर छोड़ देती है और सूक्ष्म शरीर धारण करके ज़्यादा पावरफुल हो जाती है, ज़्यादा बुद्धिमान हो जाती है, तीखी हो जाती है और एक युक्ति रचती है कि भगवान गॉडफादर की जो सबसे पावरफुल रचना प्रकृति माता है, उससे हाथ मिलाय लेती है। तो माया भले कमज़ोर हो जाती है; लेकिन पावरफुल से हाथ मिलाती है। इतनी पावरफुल होती है कि जगदम्बा की गोद में खेलने वाले 500-700 करोड़ सारे ही बच्चे उसके प्रभाव में आ जाते हैं, प्रभावित हो जाते हैं, जिनके ऊपर वो महाकाली रूपी धरणी 'राज करेगा खालसा'- सिक्खों की इस बात को पूरा साबित कर देती है। बच्चों के ऊपर तो विजयी हो जाती है, बच्चों को तो प्रभावित करती है; लेकिन बाप जगत्पिता को प्रभावित नहीं कर सकती। कितनी भी पावरफुल है! ये पावरफुल कैसे बनी? प्रैक्टिकल में लम्बे समय तक बाप का साकार संग का रंग लिया, बाप के साथ गोपियों के रूप में गुप्त संबंध का पार्ट निभाया, तो संग का भरपूर रंग लगता है, लम्बे समय तक का संग का रंग ऐसा लगता है कि सारी सृष्टि में सबसे जास्ती पावरफुल बन जाती है; लेकिन माता का रूप है या पिता का रूप है? (किसी ने कहा- माता का रूप है) बिजली का करेण्ट है। उसमें प्लग होता है। एक प्लग होता

है गड्ढे वाला फीमेल, दूसरा प्लग होता है मेल। दोनों का मेल होता है तो ऊर्जा/शक्ति तैयार होती है। ऐसे ही पिता है मेल और माता है फीमेल। तो जो फीमेल है, उसमें संग के रंग से मेल की ताकत आ जाती है। इतनी ताकत आ जाती है कि सृष्टि के अंत में सारी सृष्टि की मनुष्यात्माओं के ऊपर राज करेगी, पहले-2 ब्राह्मणों की दुनियाँ में राज करती है। ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी पहले रुद्राक्ष के मालिक बीज-रूप आत्माओं की जो एडवांस पार्टी कही जाती है, रुद्रमाला के मणके कहे जाते हैं, उनके ऊपर राज करेगी। पहले वहाँ से शुरुआत होती है, फिर सारी दुनियाँ कण्ट्रोल में आती है। जैसे यज्ञ के आदि में मनुष्य-सृष्टि की बीज-रूप बाप की एक आत्मा एक तरफ़ और सारी दुनियाँ दूसरी तरफ़ हो जाती है- ऐसे हुआ था। बेहद के दो बापों की तरह माता के भी दो रूप हैं- एक आत्मिक रूप, समझदार और एक जड़त्वमयी शरीर का बेसमझ रूप।

यज्ञ के आदि में कृष्ण वाली आत्मा को जन्म देने की शूटिंग किसने की होगी? (किसी ने कहा- छोटी माता) हाँ जी, बोल-2 करने वाली माता साक्षात्कारों के रहस्यों को पूरा नहीं समझ पाती और छोटी माता समझ जाती है और समझ करके दादा लेखराज ब्रह्मा और सरस्वती ॐ राधे वाली आत्माओं को क्लैरिफिकेशन देती है माना उनकी आत्माओं में ये निश्चय बैठ जाता है कि नई दुनियाँ में हम राधा-कृष्ण के रूप में जन्म लेंगे। ये पहले पत्तों को जन्म देने की शूटिंग हो जाती है। उनका सतयुगी प्रथम लक्ष्मी-नारायण का पद बन जाता है- नर से प्रिंस और फिर नारायण और नारी से प्रिंसेस और फिर लक्ष्मी पद। इसलिए बताया, बहुत गुह्य ज्ञान है। गीता में भी लिखा है- ''गुह्यात् गुह्यतरम् ज्ञानं।'' (गीता 18/63)- डीप समझने की बातें हैं। तो ये बातें लिखत में कैसे समझावें, जो वो समझने वाले समझ जावें? इस सीढ़ी से पहले समझेंगे; इसीलिए बाबा कहते हैं- अभी देखो! अभी कोई कहेंगे- बाबा! ये डीप बात त्रिमूर्ति के चित्र में, जो अभी कई सप्ताह से समझाते आए हैं, वो बात इतने वर्षों पहले से क्यों नहीं बताई कि त्रिमूर्ति के चित्र में बाप का चित्र कौन-सा है, जिसका परिचय देना है? तथाकथित ब्रह्माकुमारियाँ 32 किरणों वाला चित्र प्रदर्शनी में ले जाती हैं, मेले-मलाखड़ों में, कॉन्फ्रेंस में पहले रख देती हैं कि हम बाप का परिचय देते हैं। अरे! जो खुद ही बाप को नहीं जानते, वो दूसरों को बाप का परिचय कैसे देंगे? ब्रह्माकुमारियाँ बाप को जानती हैं कि कृष्ण रूपी जो सृष्टि का पहला पत्ता है, उसको कौन-से बाप ने जन्म दिया? (किसी ने कहा- नहीं जानतीं) तो दूसरों को कैसे परिचय देंगी! इधर एडवांस पार्टी वाले भी कहते हैं कि हम बाप का परिचय देते हैं। जिस बाप का परिचय देते हैं, उस बाप के सम्पन्न रूप का परिचय देते हैं या अधूरे रूप/पुरुषार्थी रूप शंकर का परिचय देते हैं? (किसी ने कहा- पुरुषार्थी) पुरुषार्थी रूप जो है, वो क्या मनुष्य-सृष्टि का सात्विक बीज है? नहीं हो सकता। तो वो मनुष्य-सृष्टि का सात्विक बीज कौन है, जिसके खास भारतवर्ष में ढेर-के-ढेर मंदिर बनाकर, लिंग मूर्ति बनाकर पूजा होती है और विदेशों में भी खुदाइयों में सबसे जास्ती लिंग मूर्तियाँ मिली हैं? वो मूर्ति सार्वभौम मान्यता प्राप्त है। एडवांस पार्टी वाले भी कहते हैं- पहले तो हमें नहीं बताया। शिकायत करते हैं- बाबा! ये बात हमको पहले क्यों नहीं बताई? बताओ, क्यों नहीं बताई? अरे! जैसे पहले बोला था- आत्मा रूपी सुई की सारी कट उतरने पर तुम बच्चे डायरैक्ट बाप से सीखोगे। ''बाबा को जितना याद करेंगे उतना लव रहेगा। कशिश होगी ना। सुई साफ है तो चकमक तरफ खैंचेगी। कट लगी हुई होगी तो खैंचेगी नहीं। यह भी ऐसे ही है। तुम साफ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो। बाप की याद से कट निकल जावेंगी।'' (मु.ता.16.3.68 पृ.3 मध्यांत) तो जिन-2 बच्चों की आत्मा रूपी सुई की विकारों की जो देह-अभिमान की खास कट है, उतरती गई और आत्मिक स्थिति की याद में/स्टार की याद में टिकने लगे, उन बच्चों के लिए बोला कि सन् 1976 से डायरैक्ट बाप से सीखोगे। माना पहले डायरैक्ट बाप से किसी

ने नहीं सीखा; ब्रह्मा से सीखा, ऊँ राधे से सीखा, दीदी-दादी-दादाओं से सीखा; लेकिन बाप को ब्रह्मा ने ही नहीं पहचाना, तो जो सन् 1976 के पहले ब्रह्माकुमार कहलाने वाले बच्चे हैं, वो कैसे बाप से डायरैक्ट जानेंगे!

ऐसे ही अभी ये बात साबित होती है कि जो त्रिमूर्ति में बाप का परिचय बच्चों को इतना क्लीयर करके पहले नहीं समझाया और अभी समझाय रहे हैं। अभी भी कोई-2 बच्चे समझ रहे हैं, कोई-2 नहीं समझ रहे। नहीं तो बताओ, त्रिमूर्ति में बाप की मूर्ति कौन-सी है? (किसी ने कहा- शंकर की) शंकर जी! अरे! शंकर जी याद में बैठे हैं तो पुरुषार्थी हैं या सम्पूर्ण हैं? (किसी ने कहा- पुरुषार्थी) पुरुषार्थी को सम्पूर्ण कहेंगे? (किसी ने कहा- नहीं) वो तो याद में बैठा है। पुराने-2 शिव के मंदिरों में भी बीच में शिवलिंग होता है और चारों ओर देवताओं की मूर्तियाँ रखी होती हैं। उन मूर्तियों के बीच में शंकर महादेव की मूर्ति भी होती है। तो बताओ, शिव के मंदिर में शंकर मुखिया है या शिवलिंग की मूर्ति मुखिया है? (किसी ने कहा- शिवलिंग) शंकर तो मुखिया नहीं है। (किसी ने कहा- नहीं है) तो वो रूप कौन-सा है, जिसके लिए इतना बोला है- गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।। जो नमन करने योग्य है वो त्रिमूर्ति में कौन है? मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। कौन-सा है शिवबाबा? (किसी ने कहा- विष्णु) बिन्दु-रूप? बीज-रूप या लिंग-रूप? विष्णु देवता है या ऊँच-ते-ऊँच भगवंत है? विष्णु रचना है या जो विष्णु देवता है, उसका रचयिता है? (किसी ने कहा- रचना है) फिर रचना बड़ी या रचयिता बड़ा? (किसी ने कहा- रचयिता बड़ा है) तो रचयिता कौन? इतने वर्ष हो गए त्रिमूर्ति का चित्र दूसरों को समझाते-2, बहुतों का गला भर गया और आज तक भी मुरली में बाबा क्या कहना चाहते हैं, वो बाप को न समझा, न दूसरों को समझाय पाया और अभी भी त्रिमूर्ति की वही बात इतने सप्ताह से समझाते चले आ रहे हैं, अभी भी नहीं बताय पा रहे कि त्रिमूर्ति के चित्र में वो मूर्ति कौन-सी है, जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है, इस सृष्टि में जिससे ऊँचा कोई भी नहीं होता। (किसी ने कहा- शिवबाबा) शिवबाबा कौन-सी मूर्ति है? (किसी ने कहा- शिव-शंकर को) शिव-शंकर को? अरे! शिव उसमें प्रवेश है; क्योंकि तीसरा नेत्र दिखाते हैं शंकर को; बाक़ी याद में है या नहीं है? (किसी ने कहा- याद में है) जो याद में है, याद का सब्जेक्ट रिवाइज़ कर रहा है, वो सम्पूर्ण पास है या नापास है? नापास है। तो वो कैसे ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत हो गया? (किसी ने कहा- निराकार शिव) (किसी ने कहा- ऊपर में जो ज्योतिबिंदु दिखाते हैं।) ऊपर में ज्योतिबिंदु दिखाते हैं, लिंग नहीं दिखाते हैं? (किसी ने कहा- लिंग भी दिखाते हैं, बिंदु भी दिखाते हैं।) निराकार-2 क्यों चिल्ला रहे हो? (किसी ने कहा- बाबा! उसमें रूप तो अभी दिखाया नहीं।) अरे! लिंग नहीं दिखाया? (किसी ने कहा- दिखाया) तो ये क्यों कहते हो- सिर्फ निराकारी है? (किसी ने कहा- नहीं, निरूप दिखाया है।) अरे! प्रवृत्ति से नई दुनियाँ बनती है। साकार और निराकार, दोनों की प्रवृत्ति चाहिए; लेकिन वो साकार और निराकार, दोनों सम्पन्न रूप चाहिए, 100 परसेण्ट सात्विक चाहिए- सात्विक योग लगाते-2 निराकार आत्मा भी 100 परसेण्ट और वो शरीर रूपी साकार बड़ा रूप, जिसमें हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान नहीं हैं, वो लिंग-रूप भी एकदम 100 परसेण्ट सात्विक। (किसी ने कहा- बाबा! बी.के. में तो वही 32 गुण वाला चित्र दिखाया।) लेकिन उन बी.के. वालों से पूछो कि जो गुण होते हैं, वो निर्गुण-निराकार में होते हैं या साकार में होते हैं? (किसी ने कहा- साकार में) वो निराकार शिव तो निर्गुण है। न उसमें गुण हैं, न उसमें अवगुण हैं; वो गुण-अवगुणों से रहित है, गुणातीत है, गुणों से परे है। जिसमें गुण होंगे, उसमें अवगुण भी होंगे। तो उसमें गुण भी नहीं हैं, अवगुण भी नहीं हैं। वो निर्गुण है और उस निर्गुण के जो बच्चे रुद्रगण हैं, वो भी कैसे होंगे? निर्गुण होंगे। एक निर्गुण बालकों की संस्था का मिसाल भी बाबा ने दिया। ''यहाँ फिर निर्गुण बालक की संस्था भी है।'' (मु.ता.26.7.67 पृ.3 आदि) वो निर्गुण बालक कहते हैं- मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं, आपे ही तरस परोई। आपे ही हमारे ऊपर तरस करो जो हमारे में गुण आ जाएँ।

तो बताओ, ये रुद्रमाला के जो मणके हैं, जिनको राम की सेना, बंदर सम्प्रदाय बता दिया, उन बंदरों में कोई गुण होता है? (किसी ने कहा- बाप की पहचान का एक ही गुण है।) उन जानवर बंदरों में कोई गुण नहीं होता। अगर गुण होता भी है, तो तुम आत्मा रूपी जो चैतन्य आत्माएँ हो, दुनियाँ वालों के संग के रंग में आकर, बहुत बड़े बाप के बच्चे होते हुए भी विधर्मियों के संग के रंग में आकर बहुत बड़े दुर्गुण वाले बन जाते हो। कोई बड़े बाप का बच्चा होता है या बड़े राजा का बच्चा हो और कुसंग में आ जाए और प्रजावर्ग के भी बच्चे हों, वो भी कुसंग में आ जाएँ, ज़्यादा कौन बिगड़ेगा? (किसी ने कहा- राजा का बच्चा) तो तुम आत्मा रूपी बच्चे ऊँचे-ते-ऊँचे बाप के बच्चे हो। इतने ऊँचे बच्चे, तो उनमें दुनियाँ के मुकाबले सबसे जास्ती ताकत होगी या नहीं होगी? (किसी ने कहा- होगी) अच्छे-से-अच्छा कर्म करने की भी ताकत और बुरे-ते-बुरा कर्म करने की भी ताकत; इसलिए मुरली में बोला- दुनियाँ के मुकाबले बड़े-ते-बड़े अच्छे देखने हों तो यहाँ देखो और बड़े-ते-बड़े राक्षस देखने हों, पापात्माएँ देखने हों तो यहाँ देखो। ''बाप कहते हैं समझदार देखना हो तो यहाँ देखो...। ... महा मूर्ख देखना हो या महा सुजान देखना हो तो यहाँ देखो।'' (मु॰ता॰ 28.10.72 पृ॰3 अंत)

तो देखो, तुम ऐसे बंदर बुद्धि बन पड़े, जो कहते हैं- मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। देह-अहंकार में आ करके एक-दूसरे से बात करते समय, लड़ाई लड़ते समय भले बड़ा समझें अपने को; लेकिन अंदर से तो समझते हैं कि मेरे अंदर कोई गुण नहीं। सबसे बड़ा गुण कौन-सा होता है? (किसी ने कहा- सहनशीलता) और सबसे बड़ी शक्ति कौन-सी होती है? पवित्रता की शक्ति। तो जो बड़े-ते-बड़ी शक्ति है- पवित्रता की पावर, वो किससे मिलती है? बड़ी-ते-बड़ी पवित्रता की पावर किससे मिलती है? अच्छा, अपवित्रता की पावर किससे मिलती है? द्वापरयुग से जो अपवित्रता की पावर आने लगी, वो किससे मिली? (किसी ने कहा- रावण से) धर्मपिताओं से, देहधारी धर्मगुरुओं से, अनेकों से। अनेकों के संग के रंग में आए, व्यभिचार में आए तो अपवित्रता आई। इसलिए बाप कहते हैं ब्रह्मा के मुख से- एक से ज्ञान सुनना चाहिए; नहीं तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। ''मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।'' (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) अनेकों से सुना तो ज्ञान व्यभिचारी हो जावेगा, फिर व्यभिचारी धर्मों में जाना पड़ेगा। इसलिए क्या करना चाहिए? एक से सुनना चाहिए। कौन एक से? जिसको हम समझ लें कि यही दुनियाँ में ऊँच-ते-ऊँचा है। ऊँचे-ते-ऊँचा होता ही है विश्व का बादशाह। जो विश्व का बादशाह है, वो इस दुनियाँ में सबसे ऊँचा है और जो सबसे ऊँचा है, वो ही हीरो पार्टधारी है। वो ही हीरो पार्टधारी सोमनाथ के मंदिर में हीरे के रूप में दिखाया गया है; लेकिन वो हीरा भी पत्थर ही था। हीरा पत्थर होता है कि नहीं? (किसी ने कहा- होता है) और शिव तो पत्थर-बुद्धि नहीं होता। इसका मतलब है कि कोई आत्मा है, जो शुरुआत के पुरुषार्थी जीवन में पत्थर-बुद्धि थी, आदि से ले करके अंत तक कोई ऐसी बात है, जिसको लेकर खास कलियुगांत में पत्थरबुद्धि रहती है। सतयुग में स्वर्णलिंग, त्रेता में रजतलिंग, द्वापर में ताम्रलिंग और कलियुग में लौहलिंग या पत्थर लिंग। वो ही पत्थर लिंग-जैसी आत्मा, पत्थरबुद्धि आत्मा, शिवबाप के ज्ञान-जल से; जैसे कोई-2 नदियाँ हैं, उन नदियों में पहाड़ से काले पत्थर नदी के जल में रगड़ते-4 समन्दर में पहुँचते हैं तो गोल सालिग्राम बन जाते हैं, ऐसे ही मनुष्य-सृष्टि में कोई आत्मा है, जो द्वापर से द्वैतवादी 63 जन्मों में और सारे संगमयुग में संघर्ष करते-5, अंत में गोल सालिग्राम बन जाती है, पत्थर का लिंग बन जाती है और वो आत्मा पुरुषार्थ की आख़िरी स्टेज में, जो बोला है कि बैल पर सवारी कैसे करते हैं? हाईजम्प लगाते हैं, तो सवार हो जाते हैं। तो ऐसे ही है, पुरुषार्थी जीवन में बैल शंकर के ऊपर सवार रहता है और जब हाईजम्प लगाने की सम्पन्न स्टेज होती है, तो बैल पर शंकर सवार हो जाता है। शिव के मंदिर में बैल भी दिखाते हैं। उसका मुख किस तरफ़ है? नाली की तरफ़ है। पुरुषार्थी जीवन में शरीर छोड़ने के बावजूद भी, उस बैल

की तामसी बुद्धि कहाँ रहती है? नाली की तरफ़ रहती है। वो ही बैल, जिसमें बैलबाजी भरी हुई है, वो ही शंकर के गले में वासुकि नाग के रूप में भी दिखाया हुआ है। वसु का पुत्र- वासुकि। 'वसु' माने धन-सम्पत्ति। बेहद की धन-सम्पत्ति क्या है? शिव का ज्ञान। वो हुआ वसु और उसका बच्चा इस सृष्टि में ऊँचे-ते-ऊँचा नारायण। वसु और उसका बच्चा कृष्ण, वो हुआ 'वासुदेव'। वसु का बच्चा वासुदेव। ऐसे ही नागों के कुल में जो नाग काम-विकार में बहुत विकारी होते हैं, उस कुल में जो वासुकि नाग है, वो उसी वसु का पुत्र है। जैसे कृष्ण को वसुदेव का पुत्र वासुदेव दिखाया। कृष्ण का नाम भक्तिमार्ग में क्या है? वासुदेव। वसुदेव कौन-से कुल का था? यादव कुल का था। शंकर को भी कौन-से कुल का बताया? यादव कुल का बताया। यादव कुल का जो बच्चा है, वो भी कौन-से कुल का हुआ? यादव कुल का हुआ। तो वो जो नाग दिखाते हैं, उसने गले से पकड़ रखा है। जैसे बब्बर शेर होता है ना! कोई भी जानवर को पकड़ेगा, चाहे वो टाइगर ही क्यों न हो, कहाँ से पकड़ता है? गले से पकड़ता है। तो गले से पकड़ रखा है। उसे वासुकि कहो, नागों में सबसे पावरफुल कहो, जो नाग बहुत कामी अथवा बैलबाजी करने वाला बैल कहो, वो बैल, वो नाग, वो बड़े-ते-बड़ा बंदर भी है, जो रामायण में किस रूप में दिखाया गया? (किसी ने कहा- हनुमान) फिर अंत में सबसे बड़ा सहयोगी भी कौन बना? (किसी ने कहा- हनुमान) तो ये अभी संगमयुग की बात है कि वो कृष्ण बच्चा, जिसके लिए सुप्रीम टीचर के द्वारा सारी पढ़ाई चल रही है, वो बच्चा, उसकी बुद्धि में अभी बैठा हुआ है कि मैं गीता का भगवान हूँ। मैं भगवान हूँ तो मेरे संग के रंग से ये दुनियाँ पतित से पावन बनेगी। इसलिए वो सूक्ष्म शरीरधारी आत्मा/चंद्रमा वाली आत्मा जिसमें भी ख़ास प्रवेश करके पार्ट बजाती है, उसके अंदर वो बैलबाजी ज़रूर करती है, वो वासुकि नाग का पार्ट ज़रूर बजाएगी। नहीं तो राम की आत्मा के लिए तो गायन है- मर्यादा पुरुषोत्तम। कैसी मर्यादा? जो भी पुरुष हैं, आत्माएँ हैं, उनमें उत्तम-ते-उत्तम नारायण वाली आत्मा की मर्यादा है। किसको याद करती है? एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। शिवबाबा वो नहीं जो साकार और निराकार का मेल है; इसलिए मुरली में बोला- तेरी बुद्धि में बाबा कहने से बिंदी ही याद आवेगी। ''तुम शिवबाबा कहते हो तो बुद्धि निराकार तरफ ही चली जाती है। निराकार ही याद आता है।'' (मु.ता.4.7.76 पृ.1 मध्य) औरों की बात नहीं। औरों को बाबा कहने से साकार ज़्यादा याद आवेगा और तेरे को बिंदी याद आवेगी।

तो बोला- बाबा! ये बात पहले क्यों नहीं बताई कि त्रिमूर्ति में ये जो शिवलिंग है, वही बाप का सम्पन्न रूप है। कौन-से बाप का? बेहद के दो बाप हैं- आत्माओं का बाप, वो भी बेहद का और मनुष्यों का बाप, वो भी बेहद का। तो कौन-से बाप की बात है? त्रिमूर्ति के चित्र में तीनों मूर्तियों के ऊपर जो चौथी मूर्ति रखी हुई है- 'शिवलिंग', वो किसकी यादगार है? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) सम्पन्न पुरुषार्थ हुए बाप की यादगार है, उस सम्पन्न स्टेज में उसकी शरीर रूपी नइया भी सम्पन्न हो जाती है और उसमें बिठैया आत्मा भी सम्पन्न हो जाती है; इसलिए मुरली में कहा- "आत्मा और शरीर रूपी नइया को पार ले जाने वाला एक ही बाप खिवैया है।" (मु.ता.3.11.74 पृ.1 आदि) वो तुम्हारी शरीर रूपी नइया को भी इस विषय वैतरणी नदी कहो, विषय-सागर कहो, इससे पार ले जाकर कहाँ ले जाएगा/कहाँ पहुँचाएगा? क्षीर-सागर में पहुँचा देगा और जितने भी देहधारी धर्मगुरु हुए, धर्मपिताएँ हुए, वो सब डुबोने वाले हैं, चाहे वो ब्रह्मा हो, चाहे वो इब्राहीम/बुद्ध/क्राइस्ट, कोई भी धर्मपिता हो, कोई भी देहधारी हो। कोई कहे- क्या प्रजापिता देहधारी नहीं है? हाँ, प्रजापिता नाम ही है 500-700 करोड़ कलियुगी तामसी प्रजा का पिता। 500-700 करोड़ जो प्रजा है, वो पतित है या पावन है? पतित है। पतितों के बाप का नाम 'प्रजापिता' है; लेकिन वो पावन बनने का पुरुषार्थी है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) तो पावन बनने के पुरुषार्थ में जो सबसे बड़ा हथियार है, क्षत्रियों की सबसे बड़ी शक्ति है, वो उसे मिली हुई है और पूर्वजन्म के पुरुषार्थ से ही मिली हुई है।

ब्राह्मणों की दुनियाँ में पूर्वजन्म का पुरुषार्थ, यज्ञ के आदि का पुरुषार्थ था या नहीं था? (किसी ने कहा- था) उसमें राम के लिए क्या बोला? राम फेल हो गया। समझने वालों ने समझा फाइनल में फेल हो गया। अरे! तब फाइनल पेपर हुआ भी था? (किसी ने कहा- नहीं) तो छोटे-मोटे पेपर में फेल हुआ या फाइनल पेपर में फेल हुआ? (किसी ने कहा- छोटे-मोटे में) चलो, फेल हो गया। कौन-से मुख्य सब्जेक्ट में फेल हो गया? (किसी ने कहा- याद में) हाँ! याद के सब्जेक्ट में फेल हो गया। कौन-सी याद? जो शिव के मंदिर में लिंग-रूप धारण करने वाले की याद दिखाई है कि इन्द्रियों से एण्टी सेक्स के साथ भी रहे; लेकिन बुद्धियोग से उपराम रहे, संन्यासियों की तरह दूरबाज-खुशबाज नहीं; उस याद में फेल हो गई। क्यों फेल हो गई? क्योंकि उस समय सृष्टि-चक्र का, 84 जन्मों का पूरा ज्ञान नहीं था और अभी तो बाप कहते हैं- मैंने अपने पास कुछ भी नहीं रखा। मेरे पास जो भी ज्ञान था तीनों कालों का, इस सृष्टि का, आत्मा का, परमात्मा का, परमपिता का, जो भी ज्ञान था, सारा ज्ञान तुम बच्चों को दे दिया। ''बाप ने अपने पास कुछ रखा ही नहीं है। वह तो एक सेकेण्ड में पूरा ही वर्सा दे देते हैं। जो कुछ भी देने का रहता ही नहीं।'' (अ.वा.8.7.73 पृ.125 मध्यांत) तो अभी तो ज्ञान में सम्पन्नता आ गई ना! तो ज्ञान के आधार पर योग में सम्पन्नता आ जाए, जो योग ही ईश्वरीय पढ़ाई का पहला सब्जेक्ट है, उसको कोई फेल कर सकता है? (किसी ने कहा- नहीं) औरों में वो ज्ञान नंबरवार है और जो परिवार का मुखिया बाप होता है, उसके अंदर परिवार के सभी भांतियों का पूरा ज्ञान होता है या अधूरा होता है? पूरा होता है। तो वो सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप है। यज्ञ के आदि में वो भले फेल हो गया; लेकिन जो बच्चा, जैसे कोई कक्षा होती है, कक्षा में कोई बच्चा फेल हो गया तो नीचे की कक्षा में पड़ा रहेगा; दूसरे बच्चे आगे चले गए। उन बच्चों के संगठन में उसको बैठाया नहीं जाएगा। तो ऐसे ही हुआ। जो ब्राह्मण परिवार था, उस परिवार से उसको कोई सहयोग मिलने वाला नहीं है। जो सुप्रीम सोल बाप है/गॉडफादर निराकार, वो उस बच्चे को ज्ञान के बाण और पुरुषार्थ रूपी धनुष दे देता है, बुद्धि रूपी तरकस दे देता है। जाओ, उस दुनियाँ में जानवरों का, जानवर बुद्धियों का शिकार करो और मारो और खाओ। वो जन्म लेता है 'एकलव्य'। एकलव्य माने एक को लव करने वाला। अरे! देखने में तो आता है- एक को लव नहीं करता है; ये तो 16,000 को करता है। शास्त्रों में प्रसिद्ध हो गया। अरे! शास्त्रकार तो जानते ही नहीं। वो तो समझते हैं 'हे कृष्ण नारायण वासुदेवः'। उन्होंने सतयुग के आदि राजा 'नारायण' और 'कृष्ण' को समझ लिया। वास्तव में संगमयुगी कृष्ण की बात है या सतयुग के कृष्ण की बात है? (किसी ने कहा- संगमयुगी) वो संगमयुगी कृष्ण शिवबाप का बच्चा है। वो ही राम है, वो ही कृष्ण है; क्योंकि उसी राम में 16 कला कृष्ण-चन्द्र की आत्मा प्रवेश करती है। वही शिव है। एक ही शरीर में तीनों आत्माएँ पार्ट बजाती हैं। विद्वान-आचार्यों ने श्लोक बनाय दिए- अच्युतम्= 'अ' माने नहीं, 'च्युतं' माने जो नीचे न गिरे माने जो अमोघवीर्य हो जाए। 'अच्युतम् केशवम्'= 'क' माने ब्रह्मा, ईश माने स्वामी; ब्रह्मा के ऊपर भी कण्ट्रोल करने वाला। जो शिवबाप ने मुरली में बोला- ऐसे-2 बच्चे थे यज्ञ के आदि में, जो मम्मा-बाबा को भी कण्ट्रोल करते थे। उनमें शिवबाबा प्रवेश करते थे, डायरैक्शन देते थे- ऐसे करो, ऐसे करो। ''मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराते थे। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था। मम्मा-बाबा भी उनसे सीखते थे।'' (मु.ता.25.7.67 पृ.2 अंत) तो देखो, जो आदि में वो अंत में भी बड़े साबित होंगे।

वो राम वाली आत्मा अपने बाप से कौन-सा वर्सा ले लेती है? जो बड़ा बच्चा होता है, खुदा-न-खास्ता बाप से अलग हो जाता है, तो बाप उसे डाडे की प्रॉपर्टी ज़रूर देता है। क्या प्रॉपर्टी दी? बाण ले जाओ, पुरुषार्थ रूपी धनुष, जिसे चाप भी कहते हैं। ''शंकर चाप जहाज, जेहि चढ़ि उतरैं पार नर, बूढ़ि सकल संसार।'' (रामायण) गुरुनानक ने अपने ऊपर ले लिया 'नानक चाप जहाज' और कबीरदास, रहीम जी ने भी अपने

ऊपर ले लिया- ''चदरिया भीनी-वीनी रे''। चदरिया माने शरीर रूपी चदरिया। ''सो चादर सुर, नर, मुनि ओढ़ी''। सुर/देवताओं ने ओढ़ी, मुनियों ने ओढ़ी, मनुष्यों ने ओढ़ी। ''ओढ़ के मैली कीनी चदरिया।'' वो शरीर रूपी चद्दर गंदी कर दी। कैसी गंदी कर दी? कलियुग में आज किसी के पेट इतने बड़े, किसी का चेहरा ऐसा-2, थुल्ल-2, एक भी लक्ष्मी-नारायण-जैसा शरीर नहीं। ''ओढ़ के मैली कीनी चदरिया, सो चादर...'', उन्होंने अपने ऊपर रख लिया नाम, '' दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी, ज्यों कि त्यों धर दीनी चदरिया।'' उस चदरिया में कोई अंतर नहीं आया माना कन्याओं की चदरिया पतली कमर वाली ली तो पतली कमर वाली ही रही और मनुष्य लेते हैं तो कन्या क्या बन जाती है? मोटी कमर वाली माता बनाय देते हैं; क्योंकि ढेर सारे बच्चे पैदा कर देते हैं। अभी ये है भगवान की बात और ये देखो, देहधारी धर्मगुरुओं ने अपने ऊपर लकब रख लिए। ये बात अभी संगमयुग की है। भगवान बाप इस समय आ करके कहते हैं- तुम्हारी आत्मा और शरीर रूपी नइया, दोनों का खिवैया एक ही बाप है। कहाँ ले जाएगा? संगमयुगी स्वर्णिम संसार क्षीर-सागर में ले जाएगा।

अब बताओ, ये कौन-सा बाप है, जो क्षीर-सागर में ले जाएगा? खुद जाता है तभी तो ले जाएगा; खुद क्षीर-सागर में नहीं जाता होगा तो बच्चों को कहाँ से ले जाएगा! ये शिवबाप की बात है, जो शांतिधाम में वापस चला जाता है? शांतिधाम को क्षीर-सागर कहेंगे या शांतिधाम कहेंगे? (किसी ने कहा- शांतिधाम) तो क्षीर-सागर में ले जाने वाला बाप कौन है, जो नर को नारायण बनाता है? डॉक्टर होगा तो डॉक्टर बनाएगा, इंजीनियर होगा तो इंजीनियर बनाएगा; ऐसे नहीं है कि खुद हो नहीं और दूसरों को बना दे। तो खुद जीवनमुक्त होगा तो दूसरों को, बच्चों को जीवनमुक्त बनाएगा; खुद जीवनमुक्त नहीं होगा तो बच्चों को जीवनमुक्त नहीं बनाय सकता।

इसलिए बोला कि राजाओं का राजा। तो ये देखो, राजे पूज्य; कौन-से राजे पूज्य सो पुजारी? सतयुग के जो भी राजाएँ हैं, वो पूज्य तो बनते हैं। नारायण बनेंगे ना! देवता बनेंगे या नहीं बनेंगे? (किसी ने कहा- बनेंगे) पूज्य तो बनते हैं, पुजारी भी बनते हैं और जब पुजारी बनते हैं, तो माथा टेकते हैं। किसको माथा टेकते हैं? जिसको माथा टेकते हैं, वो किसी देहधारी को माथा नहीं टेकता- न सतयुग में, न त्रेता में, न द्वापर में, न कलियुग में; लेकिन उसको सारी दुनियाँ माथा टेकती है। वो कौन-सी मूर्ति है? शिवलिंग। वो शिवलिंग साकारी भी है और निराकारी भी है। वो ही ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है, जिसकी द्वापर के आदि में, भक्तिमार्ग की सात्विक स्टेज में, सोमनाथ मंदिर में राजा विक्रमादित्य के द्वारा पूजा हुई थी। राजाएँ तो विकारी होते हैं द्वापरयुग में। उस विकारी बुद्धि राजा को बुद्धि किसने दी? मनुष्य-सृष्टि के बाप ने बुद्धि दी। वो बाप पूज्य तो है; लेकिन पुजारी नहीं बनता। तो ये राज़ सबको बताना चाहिए कि कौन-से राजाएँ हैं जो मत्था टेकते हैं? भारत में देवी-देवता धर्म वाले थे, तो पूज्य थे और वही राजा-रानी जब पुजारी बनते हैं, तो उनकी प्रभावित होने वाली प्रजा भी पुजारी बन जाती है। तो बस! वही पुजारी प्रजा भी और पुजारी राजा भी, वो दोनों उनको माथा टेकते हैं। 'उनको' माने किनको? जो किसी को माथा नहीं टेकता। कौन है वो? (किसी ने कहा- शिवलिंग) हिस्ट्री में भी है- सारे भारत का सम्राट अकबर, उसने ऐड़ी-चोटी की ताकत लगा दी। लाखों की सेना लेकर आक्रमण किए। फिर रिज़ल्ट क्या हुआ? माथा झुका पाया? नहीं झुका पाया। महाराणा प्रताप के सामने क्या हुआ, रिज़ल्ट क्या आया- सदैव जीत में रहे या हार में रहे? (किसी ने कहा- जीत में) इसलिए बाबा वरदान देते हैं- बच्चे, विजय तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। ''आप ब्राह्मणों का विजय जन्मसिद्ध अधिकार है।'' (अ.वा.3.3.07 पृ.2 अंत) ॐ शांति।